# विश्व हिंदी समाचार

## Vishwa Hindi Samachar

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष : 13 | अंक : 50 | जून, 2020

### हिंदी से संबंधित कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ

इस वर्ष कोविद-19 के प्रकोप के कारण विश्व जन-मन पीड़ित हुआ, विश्व भर में कोलाहल और अव्यवस्था उत्पन्न हुई। इस महामारी की चुनौती को अवसर में बदलते हुए हिंदी भाषा फल-फूल रही थी। वर्चुअल और डिजिटल दुनिया में हिंदी का वर्चस्व तो बढ़ा ही था, लेकिन लॉकडाउन ने हिंदी के प्रवाह को गति देने के लिए अन्य कई धाराएँ शामिल हो गईं। जहाँ कुछ समय पहले अभासी मंचों के माध्यम से जुटाव कष्टप्रद लगता था, अब वही सबसे सरल, सुरक्षित, व्यावहारिक और सक्षम माध्यम बन गया। मार्च महीने से विश्व के कई देशों में लॉकडाउन के चलते कई वेबिनार्स का आयोजन किया गया और लॉकडाउन की समाप्ति के बाद भी यह कारवाँ जारी रहा। विश्व हिंदी समाचार के इस अंक में विभिन्न ऑनलाइन आयोजनों की सूचनाएँ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जा रही है।

### हैदराबाद से 'डिजिटल संप्रेषण और साहित्य' पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

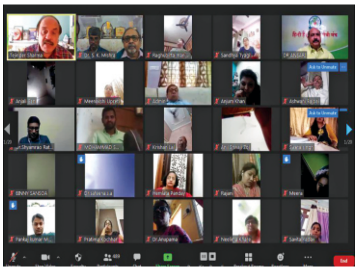

1 जून, 2020 को हिंदी हैं हम विश्व मैत्री मंच, हैदराबाद के तत्वावधान में 'तकनीकी व डिजिटल संप्रेषण की दुनिया में हिंदी साहित्य के बढ़ते कदम' विषय पर एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। पृ. 2

### 'कोविड-19 से उत्पन्न चुनौतियाँ और साहित्य' पर अंतरराष्ट्रीय हिंदी वेबिनार

2 मई, 2020 को साखी, प्रेमचंद साहित्य संस्थान और हिंदी विभाग काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी वेबिनार का आयोजन हुआ, जिसमें हिंदी विभाग, सेंटर फ़ॉर लेंग्वेज स्टडीज़, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर का सहयोग रहा। पृ. 3

### संत कबीर जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय वेबिनार

5-7 जून, 2020 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण अभियान के अंतर्गत विश्वविद्यालय में संचालित हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग तथा दर्शन एवं संस्कृति विभाग के सहयोग से कबीर जयंती के अवसर पर 'संत कबीर : समकालीन समाज, दर्शन और साहित्य' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। पृ. 5

### मॉरीशस से ऑनलाइन बहुभाषी कवि-सम्मेलन

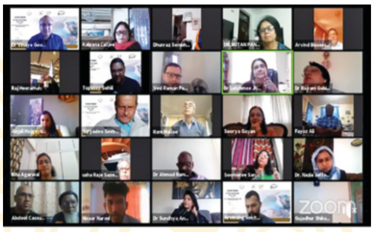

20 जून, 2020 को महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के स्कूल ऑफ़ इंडियन स्टडीज़ के हिंदी विभाग द्वारा 'क्रिएटिविटी अनलॉक्ड' - बहुभाषी कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह मॉरीशस में हिंदी समेत अन्य भारतीय भाषाओं का पहला ऑनलाइन कवि-सम्मेलन रहा। इसमें मॉरीशस के हिंदी, उर्दू, तमिल, तेलुगु, मराठी व भोजपुरी भाषाओं के स्थापित व नवोदित कवि-कवयित्रियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। पृ. 6

**इस अंक में आगे पढ़ें :**

वेबिनार / ऑनलाइन गोष्ठी / जयंती — पृ. 2-11
पुरस्कार / सम्मान — पृ. 12
श्रद्धांजलि — पृ. 12
सूचना — पृ. 13-15
संपादकीय — पृ. 16

ISSN 16942485

# वेबिनार / ऑनलाइन गोष्ठी / जयंती

## हैदराबाद से 'डिजिटल संप्रेषण और साहित्य' पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

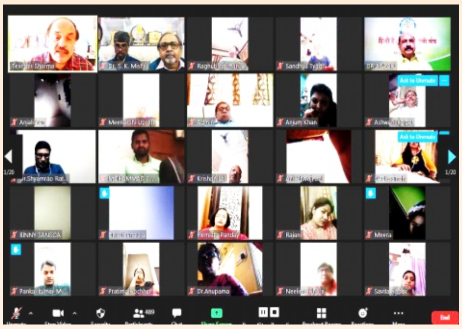

1 जून, 2020 को 'हिंदी हैं हम विश्व मैत्री मंच', हैदराबाद के तत्वावधान में 'तकनीकी व डिजिटल संप्रेषण की दुनिया में हिंदी साहित्य के बढ़ते कदम' विषय पर एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबिनार सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में प्रसिद्ध कवि-समीक्षक प्रो. ऋषभदेव शर्मा और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त वरिष्ठ प्रवासी साहित्यकार श्री तेजेंद्र शर्मा उपस्थित थे। हैदराबाद केंद्र से संचालित अंतरराष्ट्रीय वेबिनार में दोनों विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए।

प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी साहित्य के क्षेत्र में हैदराबाद नगर को एक विशेष स्थान दिलाया है। उन्होंने तकनीकी संप्रेषण के माध्यम से हिंदी साहित्य की बढ़ोतरी के बारे में अपने विचार अभिव्यक्त किए। प्रो. ऋषभ ने कहा कि वर्तमान समाज सही अर्थ में 'सूचना समाज' है। अब साहित्यिक पुस्तकों की दहलीज़ लाँघकर डिजिटल मल्टीमीडिया के सहारे अधिक लोकतांत्रिक बनने की ओर अग्रसर है। उन्होंने मुक्त वितरण के लिए तकनीकी के उपयोग की जानकारी देने के साथ ही विभिन्न आधुनिक संचार माध्यमों में स्टोरी-टेलिंग की तुलना करते हुए 'डिगिंग' और 'स्प्रेडिंग' की अवधारणाओं का खुलासा किया।

वरिष्ठ साहित्यकार तथा विदेशों में हिंदी के प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में अपना परचम लहराने वाले श्री तेजेंद्र शर्मा ने अपने विचारों में डिजिटल रूप से हिंदी के विकास के बारे में अपनी राय रखी। डिजिटल एवं ऑनलाइन संचार ऐसी क्रांति है, जो निःसंदेह देश को प्रगति के पथ पर त्वरित गति से ले जा सकती है। इसी का लाभ आज हिंदी साहित्य उठा रहा है। आज इतनी सारी वेबसाइटें, ब्लॉग हैं कि वे हिंदी की कथा, कहानी, कविताएँ, निबंध, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज, संस्मरण, एकांकी, नाटक तथा अन्य विधाओं को सुंदर मंच प्रदान कर रहे हैं। डिजिटल एवं ऑनलाइन संचार में भाषा का संयम, शब्दों का चयन उपयुक्त होना चाहिए। भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ-साथ दूसरों की भावनाओं का सम्मान भी अवश्य होना चाहिए। ऐसा करने पर ही हिंदी साहित्य का विकास तकनीकी तथा डिजिटल रूप में हो सकता है। आज रचनाकार, हिंदी कुंज, कविताकोश, गद्यकोश, प्रतिलिपि जैसे कई साइट इन बातों का ध्यान रखते हुए हिंदी साहित्य की सेवा में निरंतर लगे हुए हैं। पढ़ने को तो कई किताबें हैं, लेकिन गुलज़ार के शब्दों में कहना हो तो सारी किताबें अलमारी में पड़े-पड़े अपनी बेबसी पर रो रही हैं। हम यह सोच रहे हैं कि किताबें अलमारी में बंद हैं, जबकि सच्चाई यह है कि हम कहीं न कहीं अपनी मजबूरियों में बंद हैं।

मंच के महासचिव डॉ. डी. विद्याधर ने अपने स्वागत-भाषण में हिंदी के विकास को लेकर अपनी कटिबद्धता व्यक्त की। साथ ही कोरोना महामारी के काल में भी हिंदी का अलख जगाने की पुरजोर अभिव्यक्ति की। अध्यक्ष डॉ. मो. रियाजुल अंसारी ने मंच के हिंदी के प्रचार-प्रसार कार्यक्रमों की जानकारी दी। इसके अतिरिक्त वेबिनार में मंच की ओर से उपाध्यक्ष डॉ. राजेश अग्रवाल, डॉ. राकेश शर्मा, डॉ. सुषमा देवी, डॉ. डी. जयप्रदा तथा डॉ. सुरेश कुमार मिश्र उपस्थित थे। ध्यातव्य है कि इस वेबिनार में प्रत्यक्ष रूप से 500 प्रतिभागियों ने तथा यूट्यूब के सीधे प्रसारण पर 2500 प्रतिभागियों ने ज्ञानवर्धन किया। सभी प्रतिभागियों को ई-प्रमाण पत्र प्रदान किए गए।

*डॉ. विद्याधर की रिपोर्ट*

## अम्बाला छावनी से 'कोविड-19 : हिंदी साहित्य, संस्कृति और तकनीक' पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

10 जून, 2020 को आर्य गर्ल्स कॉलिज, अम्बाला छावनी में हिंदी विभाग द्वारा 'कोविड-19 : हिंदी साहित्य, संस्कृति और तकनीक' विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ माँ सरस्वती की वंदना से किया गया। कार्यक्रम की संयोजिका डॉ. संध्या गौतम ने वेबिनार का परिचय देते हुए कहा कि इस वेबिनार का उद्देश्य विश्व में रचित हिंदी साहित्य में निहित भारतीय संस्कृति से अवगत करवाना, हिंदी शिक्षण को नई तकनीक से जोड़ना तथा कोविड-19 से प्रभावित समाज में आत्मबल, आशा और उत्साह का संचार करना है।

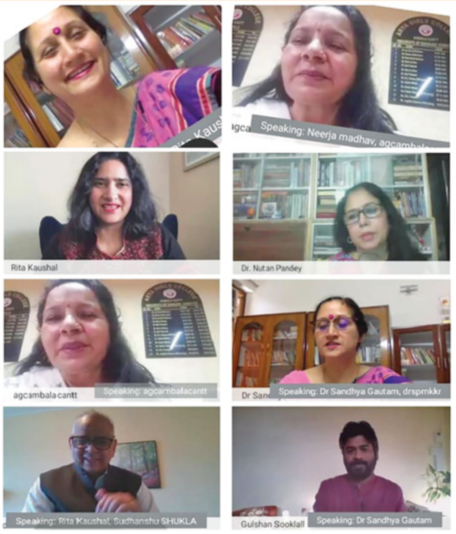

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली के सहायक निदेशक डॉ. दीपक पांडेय उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि दूरवर्ती शिक्षा निदेशालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के डॉ. कामराज सिंधु तथा अध्यक्ष मातृभूमि सेवा मिशन के संस्थापक डॉ. श्रीप्रकाश मिश्र रहे।

प्राचार्या डॉ. अनुपमा आर्य ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह हमारे लिए गौरव की बात है कि कोविड-19 के दौर में हम नई तकनीक से जुड़कर विश्व भर के विद्वानों की ज्ञानगंगा को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य कर रहे हैं। महाविद्यालय ऐसे प्रयास निरंतर करता रहेगा।

मुख्य अतिथि डॉ. दीपक पांडेय ने कहा कि विश्व की अनेक संस्कृतियाँ भी नष्ट हो गईं, लेकिन भारतीय संस्कृति अपनी भव्यता, निरंतरता और उदारता से आज तक जीवित है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. कामराज सिंधु गुरु ने कहा कि साहित्य मनुष्य को निष्काम कर्म की प्रेरणा तथा श्रेष्ठ मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

श्रीप्रकाश मिश्र ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि आज भौतिकवाद के युग में जो मानवीय मूल्यों का पतन हुआ है, आज कोरोना काल में हमें पुनः आध्यात्मिकता, सरलता और सहजता का जीवन जीने के लिए मार्ग दिखाया है। भारतीय धर्म दर्शन में सारे विश्व को एक कर दिया है।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली में सहायक डॉ. नूतन पांडेय ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि साहित्य में कोई भी कवि मानवीय संवेदना से ही महानता को प्राप्त करता है, इसके अभाव में साहित्य संभव नहीं है।

वार्सा विश्वविद्यालय, पोलैंड में आई.सी.सी.आर हिंदी पीठ डॉ. सुधांशु कुमार शुक्ल ने कहा कि हमारी संस्कृति का आधार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' है। हम सब के भले के लिए कार्य करते हैं व सब को साथ लेकर चलते हैं भारतीय संस्कृति विराट है।

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के वरिष्ठ व्याख्याता श्री गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल ने अपने वक्तव्य में कहा कि तकनीक से हम सूचना प्राप्त कर सकते हैं, ज्ञान नहीं। ज्ञान के लिए सांस्कृतिक पृष्ठभूमि चाहिए।

सारनाथ, वाराणसी की प्रसिद्ध साहित्यकार एवं समाज सेविका श्रीमती नीरजा माधव ने कहा कि कोराना काल में भारतीय संस्कृति ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय संस्कृति को समझने के लिए अक्षत, अर्घ्य जैसे शब्दों की पृष्ठभूमि को समझना पड़ेगा।

हिंदी स्कूल सिंगापुर में शिक्षिका व ऑस्ट्रेलियन गवर्नमेंट की लोकल काउंसिल में फ़ाइनेंस ऑफ़िसर श्रीमती रीता कौशल ने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने सारे कोरोना काल को उत्सव के रूप में बदल दिया और पूरी मानव जाति को मानसिक बल प्रदान किया व कहा कि ये समय भी निकल जाएगा।

इस वेबिनार में महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तर प्रदेश, वेस्ट बंगाल, पंजाब आदि के प्रायः सभी प्रांतों से लगभग 325 प्रतिभागियों ने भाग लिया। वेबिनार के अंत में प्रतिभागियों की जिज्ञासा को विद्वानों ने सटीक उत्तर देकर शांत किया। सह संयोजिका प्रो. अमनदीप मक्कड़ तथा डॉ. अनीता गोदारा ने अपने सहयोग से वेबिनार को सफल बनाया। वेबिनार के अंत में संयोजिका डॉ. संध्या गौतम ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

*डॉ. दीपक पांडेय की रिपोर्ट*

## 'कोविड-19 से उत्पन्न चुनौतियाँ और साहित्य' पर अंतरराष्ट्रीय हिंदी वेबिनार

2 मई, 2020 को साखी, प्रेमचंद साहित्य संस्थान और हिंदी विभाग काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी वेबिनार का आयोजन हुआ, जिसमें हिंदी विभाग, सेंटर फ़ॉर लेंग्वेज स्टडीज़, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर का सहयोग रहा। इस वेबिनार में आभासी मंच के माध्यम से विचार किया गया कि साहित्य की यह दुनिया किस हद तक इस महामारी से निपटने में हमारी मदद कर रही है और कर सकती है। इसमें सम्मिलित वक्ता साहित्य और भाषा के अलग-अलग क्षेत्रों से सम्बन्ध रखते हैं। इस वेबिनार में ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर पीटर फ़्रीडलैंडर, तुरीनो विश्वविद्यालय इटली की प्रोफ़ेसर अलेसांद्रा कोन्सोलारो, 'वागर्थ' पत्रिका के संपादक और सुप्रसिद्ध विचारक प्रोफ़ेसर शंभुनाथ, हिंदी की महत्त्वपूर्ण कथाकार मनीषा कुलश्रेष्ठ तथा प्रसिद्ध आलोचक प्रो. अवधेश प्रधान ने हिस्सेदारी की। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. राकेश भटनागर एवं कला संकाय की प्रमुख प्रो. रामकली सराफ़ के संरक्षण में हुए इस वेबिनार का संयोजन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रो. सदानंद शाही तथा सहसंयोजन नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर की डॉ. संध्या सिंह ने किया।

*डॉ. संध्या सिंह की रिपोर्ट*

## आगरा से 'कोरोना, समाज व साहित्य' विषय पर वेबिनार

24 मई, 2020 को डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के कन्हैयालाल मुंशी संस्थान द्वारा 'कोरोना, समाज व साहित्य' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक के कुलपति प्रो. श्रीप्रकाश मणि त्रिपाठी रहे। उन्होंने कहा आज सब के लिए सब के पास समय है, जिससे हम भावना प्रधान हो गए हैं। यही भावना साहित्य को जन्म देती है। महामारी के कारण समाज में व्याप्त भय, अवसाद, आर्थिक समस्या से निजात पाने के लिए साहित्य रचना की आवश्यकता है।

वेबिनार के मुख्य वक्ता, वरिष्ठ साहित्यकार श्री तेजेंद्र शर्मा ने कहा कि कोरोना काल में लॉकडाउन सुरक्षा देने के साथ कल्पनाशील लेखकों को सृजन का समय भी दे रहा है। लेखक लगातार दिमाग में लिखता रहता है। इसको कागज़ पर लाने का काम करना चाहिए। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अशोक मित्तल ने कहा कि कोरोना की वजह से जीवन की व्यस्तता थम जाने से मानव तनाव और अवसाद में आने लगा है, ऐसे में साहित्य हमें इन सबसे बचाता है।

कन्हैयालाल मुंशी संस्थान के निदेशक प्रो. प्रदीप श्रीधर ने डॉ. हरीश कुमार शर्मा की लिखित पंक्तियाँ सुनाईं। लंदन की वरिष्ठ साहित्यकार ज़किया ज़ुबैरी ने कहा कि सोशल मीडिया पर कोरोना पर लिखा जा रहा साहित्य खुद किसी वायरस से कम नहीं है। लेखकों को किसी दबाव में लिखने से बचना चाहिए। ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के डॉ. इमरे बंघा ने कहा कि भारत में मौखिक साहित्य की परंपरा काफ़ी पुरानी है। आज के समय में हम मौखिक साहित्य में लौटकर स्क्रीन के थकान से निजात पा सकते हैं। डेनमार्क की वरिष्ठ साहित्यकार अर्चना पैन्यूली ने कहा कि साहित्य का काम सिर्फ़ मनोरंजन ही नहीं, बल्कि समाज को नई दिशा देना भी होता है। वेबिनार में डॉ. रीतेश कुमार, डॉ. नीलम यादव, डॉ. रणजीत भारती भी उपस्थित थे।

*साभार :*

*श्री तेजेंद्र शर्मा का फ़ेसबुक पृष्ठ*

## सिंगापुर की पहली ऑनलाइन कवि-गोष्ठी

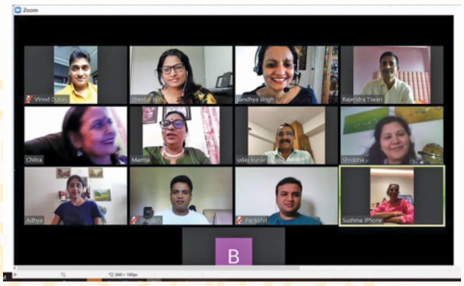

4 अप्रैल, 2020 को 'सिंगापुर संगम' की ओर से पहली 'ऑनलाइन काव्य-गोष्ठी' का आयोजन किया गया। 'सिंगापुर संगम' की संपादिका डॉ. संध्या सिंह की इस अनूठी पहल ने सिंगापुर में रहने वाले कवियों के साथ-साथ भारत से भी कवियों से सामूहिक काव्य-संवाद स्थापित कराया। काव्य-गोष्ठी का संचालन डॉ. संध्या सिंह ने किया और राजेन्द्र तिवारी, आराधना श्रीवास्तव और शीतल जैन के सौजन्य से

तकनीकी संचालन संभव हो सका। इसमें सिंगापुर से श्रद्धा जैन, चित्रा गुप्ता, राजेन्द्र तिवारी, विनोद दुबे, आराधना श्रीवास्तव, शीतल जैन, ममता मंडल सिंह, उमेश कुमार और परीक्षित शुक्ल ने भाग लिया। कोविड-19 ने बहुत कुछ हमसे छीन लिया है, लेकिन कहीं कुछ-कुछ दे भी गया है और हम इससे इनकार नहीं कर सकते। तकनीकी के व्यापक इस्तेमाल की झलक इस कोरोना काल में चारों ओर दिखाई दे रही है।

*डॉ. संध्या सिंह की रिपोर्ट*

## दिल्ली से ऑनलाइन कार्यशाला

7 मई, 2020 को जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,दिल्ली के रूसी अध्ययन केंद्र द्वारा 'अनुवाद और व्याख्या के बारे में महात्मा गांधी के विचार' विषय पर एक कार्यशाल का आयोजन ज़ूम के माध्यम से किया गया। प्रो. हेम चंद्र पांडे मुख्य वक्ता थे। विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों (भारत, रूस, किर्गिस्तान, लंदन, पुना, सेंट-पीटरबर्ग) के 70 से अधिक विद्वानों, व्याख्याकारों, शिक्षकों एवं छात्रों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। डॉ. किरण सिंह वर्मा ने प्रो. पांडे के जे.एन.यू. में कार्यकाल के दौरान उनके करियर और रूसी से हिंदी में उनके शोध और अनुवाद कार्यों से सभी प्रतिभागियों को परिचित कराया। प्रो. पांडे जी रूसी अध्ययन केंद्र जे.एन.यू., नई दिल्ली के संस्थापकों में से एक थे। इस अवसर पर प्रो. पांडे के व्याख्यान ने एक मज़बूत छाप छोड़ी और सुनने वालों में रुचि पैदा की। प्रो. रंजना बैनर्जी ने समापन-भाषण देते हुए प्रो. पांडे को उनकी उत्कृष्ट प्रस्तुति और प्रतिभागियों को उनके सवालों और टिप्पणियों के लिए धन्यवाद दिया। रशियन स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ यूमानिटीज़ हिंदी समूह के छात्र - एलिना फ़साखोवा, मारिया स्कोरोबोगाटोवा, अमीना मुहम्मतखानोवा, सोफ़िया किसेलेवा, विक्टर टोरोपोव, अलेना प्लोटनिकोवा, एकातेरिना मोस्केलेंको और शिक्षक - प्रोफ़ेसर अलेक्ज़ेंडर स्टोल्यारोव और इंदिरा गाज़िएवा ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

*साभार : हिंदी आर.एस.यू.एच. का फ़ेसबुक पृष्ठ*

## भोपाल से दो दिवसीय रामायण वेबिनार

26-27 मई, 2020 को अयोध्या शोध संस्थान के मार्गदर्शन में रामायण केंद्र भोपाल ने दो दिवसीय रामायण वेबिनार का आयोजन किया। डॉ. वाईपी सिंह ने इस मौके पर कहा कि वर्तमान संदर्भों में विश्व व्यापी रामायण लोक संस्कृति के संरक्षण और संग्रहण की नितांत आवश्यकता है। शोधार्थी इस संबंध में अपना प्रस्ताव बनाकर प्रस्तुत कर सकते हैं। रामायण केंद्र भोपाल के निदेशक डॉ. राजेश श्रीवास्तव ने बताया कि रामायण केंद्र भोपाल विगत पाँच साल से रामायण और लोक संस्कृति के विविध पक्षों पर अपने कार्यों में सक्रिय है। रामायण केंद्र से देश-विदेश के लगभग 500 से भी अधिक शोधमित्र जुड़े हैं, जो सभी आयु वर्ग के हैं। बड़ी संख्या में शोध छात्र भी हैं, जो विभिन्न विश्वविद्यालयों में पी.एच.डी. कर रहे हैं। सभी शोध मित्र अपनी क्षमता के अनुसार विश्वकोश के लिए सहयोग कर रहे हैं। इस कार्यक्रम में डॉ. क्षमा पांडे ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। संचालन सहयोग गीतिका वेदिका ने किया और आभार प्रदर्शन डॉ. दिनेश श्रीवास्तव ने किया।

*साभार : नईदुनिया*

## ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय रामायण कार्यशाला

31 मई, 2020 को अयोध्या शोध संस्थान के निदेशक डॉ. योगेंद्र प्रताप सिंह के मार्गदर्शन में रामायण केंद्र भोपाल द्वारा एक ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय रामायण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

रामायण केंद्र भोपाल के निदेशक डॉ. राजेश श्रीवास्तव ने कार्यशाला में पधारे सभी विद्वानों का स्वागत किया। अपने वक्तव्य में डॉ. राजेश श्रीवास्तव ने राजा भोज की चंपू रामायण में विमानों की स्थिति का उल्लेख करते हुए उसकी वैज्ञानिक व्याख्या की। विमान बनाने की विधि पर आधारित काव्य समरांगण सूत्रधार की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि एक अकेला पुष्पक विमान ही उस समय नहीं था, अनेक प्रकार के विमान पहले भी अस्तित्व में थे। विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने मॉरीशस के प्रत्येक घर के बाहर स्थापित हनुमान मंदिर की चर्चा की तथा वहाँ के लोक में व्याप्त रामकथा के व्यावहारिक पक्ष को रखा। डॉ. योगेंद्र प्रताप सिंह ने रामायण विश्वकोश के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी और अपने अनुभव साझा करते हुए रामायण की वैश्विक संस्कृति के रोचक तथ्यों से अवगत कराया। रामायण शोध केंद्र से जुड़े शोध मित्र अपने विषय पर सामग्री एकत्र कर भेजेंगे, जिसमें से विश्वकोश हेतु चयन किया जा सकेगा। भोपाल के युवा एवं चर्चित आलोचक डॉ. आनंद सिंह ने राम के वनगमन मार्ग की सांस्कृतिक एवं भौगोलिक स्थितियों पर चर्चा की और राम के वनगमन मार्ग की यात्रा का अपना अनुभव भी बताया। 2009 में वे संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश की ओर से राम वनगमन पथ समिति के सदस्य भी रहे हैं। पाश्चात्य विद्वानों द्वारा लिखी गई रामायण विषयक पुस्तकों की भी उन्होंने चर्चा की। डेनमार्क में अध्यापिका एवं हिंदी की कथाकार अर्चना पैन्यूली ने बताया कि भारत से आए लोग हमारे देश की शांति और व्यवस्था को देखकर हमसे कहते हैं कि तुम्हारे यहाँ तो राम राज्य है। उन्होंने बताया कि यूरोप के अन्य देशों की तरह यहाँ के विश्वविद्यालयों में भी इंडोलॉजी विभाग में रामायण से संबंधित पुस्तकें और उनके अनुवाद मिलते हैं तथा लंबे समय से डेनमार्क में रह रहे भारतीय अपनी बातचीत में रामायण के पात्रों की व्यंजना करते हैं। एर्चिएस विश्वविद्यालय, कैसेरी, तुर्की में प्राध्यापक रहे डॉ. साईनाथ चपले ने तुर्की जैसे मुस्लिम देश में रामायण के प्रति उदासीनता को रेखांकित किया। तथापि उन्होंने बताया अकादमिक स्तर पर शोध कर रहे विद्वानों एवं विभागों में रामायण तथा महाभारत की पुस्तकें और उनके अनुवाद मिलते हैं। फ़िजी में द्वितीय सचिव रहे अनिल शर्मा ने अपने कार्यकाल में फ़िजी में अनेक रामायण मंडलियों को प्रोत्साहित किया था। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि रामायण संस्कृति को संरक्षित एवं समृद्ध बनाए रखने के लिए हमें अपनी भाषा और लिपि को भी बचाना होगा। विक्रम विश्वविद्यालय के कुलानुशासक डॉ. शैलेंद्र शर्मा ने लोक में व्याप्त कथाओं, गीतों तथा अन्य ललित कलाओं के बारे में जानकारी दी। अंचलों में रामायण से संबंधित स्थानों पर शोध की आवश्यकता पर उन्होंने ज़ोर दिया। अभिनेत्री एवं साहित्यकार गीतिका वेदिका ने बुंदेलखंड में वास्तु की दृष्टि से इमारतों की व्याख्या की तथा अंचल में रामायणकालीन स्थानों से परिचय कराया।

कार्यक्रम के आरंभ में सरस्वती वंदना अभिष श्रीवास्तव ने प्रस्तुत की। 'अक्षरा' की संपादक जया शर्मा केतकी ने रामायण केंद्र भोपाल संस्था का परिचय दिया। रामायण कार्यशाला में वरिष्ठ लेखक महेंद्र भीष्म, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की निदेशिका सुनीता पाहूजा सहित देश-विदेश के अनेक साहित्यकार विद्वान तथा प्राध्यापक एवं शोध मित्र उपस्थित थे। संचालन गीतिका वेदिका ने तथा आभार-प्रदर्शन डॉ. दिनेश श्रीवास्तव ने किया।

*डॉ. राजेश श्रीवास्तव की रिपोर्ट*

## 'कोरोना संक्रमण काल में साहित्य की उपयोगिता' विषय पर वेबिनार

12 जून, 2020 को पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला महाविद्यालय के अंग्रेज़ी, हिंदी और संस्कृत विभाग की ओर से कोरोना संक्रमण काल में साहित्य की उपयोगिता के विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया।

प्राचार्य डॉ. अर्चना राजन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ. रीता अग्निहोत्री ने विषयवस्तु से सभी को अवगत कराया। वेबिनार में साहित्य की उपयोगिता पर शिक्षाविदों ने अपने विचार व्यक्त किए। वेबिनार में लखनऊ विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के प्रोफ़ेसर डॉ. आर.पी. सिंह और के. एन.पी.जी. कॉलिज के हिंदी विभाग से अवकाश प्राप्त प्रोफ़ेसर क्षमा शंकर पांडेय ने शिक्षकों को साहित्य के विषय में विस्तृत रूप से जानकारी दी। उन्होंने कोरोना काल में साहित्य के महत्त्व पर बात की।

वेबिनार में ज़िले के महाविद्यालयों के शिक्षकों, विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं व प्राध्यापकों ने ऑनलाइन भाग लिया। डॉ. पूनम पांडे ने सभी का धन्यवाद किया।

*साभार : जागरण*

## आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की 156 वीं जयंती पर समारोह

15 मई, 2020 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की 156वीं जयंती पर समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के चित्र पर माल्यार्पण और पुष्पांजलि अर्पित की गई। सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि द्विवेदी जी अपने युग की साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना को दिशा और दृष्टि प्रदान करने वाले युग-प्रवर्तक साहित्यकार थे। उन्होंने साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती' के माध्यम से हिंदी का महान यज्ञ आरंभ किया था। इसके माध्यम से उन्होंने अनेक मनीषी साहित्यकारों को हिंदी-सेवा के लिए प्रेरित किया तथा अपने मार्गदर्शन में अगणित नव साहित्य रत्न गढ़े। उन्होंने 'अनुवाद' को भी इस हेतु एक बड़े उपकरण के रूप में उपयोग किया। विभिन्न भाषाओं की मूल्यवान कृतियों का अनुवाद कर उन्होंने हिंदी का भंडार भरा। कवयित्री डॉ. शालिनी पाण्डेय, कुमारी मेनका, नरेंद्र कुमार सिंह, अमरेन्द्र झा, उमेश कुमार, वीरेंद्र कुमार यादव, महेश प्रसाद आदि ने कवि को पुष्पांजलि अर्पित की।

*डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट*

## संत कबीर जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय वेबिनार

5-7 जून, 2020 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं शिक्षण अभियान के अंतर्गत विश्वविद्यालय में संचालित हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग तथा दर्शन एवं संस्कृति विभाग के सहयोग से कबीर जयंती के अवसर पर 'संत कबीर : समकालीन समाज, दर्शन और साहित्य' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. जी. गोपीनाथन उपस्थित थे। माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने अध्यक्षता की।

प्रो. त्रिपाठी ने कबीर के दर्शन के विभिन्न पक्षों पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि संत कबीर के योग और वेदांत से संबंधित प्रत्ययों को अपनाकर आध्यात्मिक क्रांति की दिशा में पहल की जा सकती है। अध्यक्षीय उद्बोधन में माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि संत कबीर को मात्र के कवि के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। उनकी वाणी तत्वगुणों का उद्रेक करती है। `

उद्घाटन सत्र का संचालन हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. रामानुज अस्थाना ने किया तथा आभार-ज्ञापन हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग की अध्यक्षा तथा वेबिनार की संयोजक प्रो. प्रीति सागर ने किया। स्वागत वक्तव्य हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के निदेशक प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने प्रस्तुत किया। कबीर चौरा वाराणसी के गायन मंडली ने कबीर गायन प्रस्तुत किया। मंगलाचरण डॉ. वागीश राज शुक्ल ने प्रस्तुत किया और विश्वविद्यालय के कुलगीत से वेबिनार का प्रारंभ किया गया।

वेबिनार का समापन 7 जून को हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के माननीय केंद्रीय मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' उपस्थित थे। सत्र की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने की।

*श्री बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट*

## 'तकनीक की बुनियादी अवधारणाएँ और हिंदी' पर ऑनलाइन संगोष्ठी

31 मई, 2020 को अक्षरम् और वैश्विक हिंदी परिवार के संयुक्त तत्वाधान में 'तकनीक की बुनियादी अवधारणाएँ और हिंदी' विषय पर एक ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

अक्षरम् के अध्यक्ष और वैश्विक हिंदी परिवार के संयोजक श्री अनिल जोशी ने बताया कि इस विषय पर 12 कड़ियों की एक श्रृंखला की योजना बनाई गई है और यह इस कड़ी की पहली कक्षा थी। उन्होंने बताया कि सोशल मीडिया से जो लोग जुड़े हैं, उनकी सामूहिक ऊर्जा का उपयोग कर हिंदी के विभिन्न क्षेत्रों में सुनियोजित विकास का प्रयास करना चाहिए। यह संगोष्ठी भी ऐसा ही एक प्रयास है। ब्रिटेन के श्री पद्मेश गुप्त ने भी इस अवसर पर शुभकामनाएँ दीं।

तकनीक विशेषज्ञ श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच कार्यक्रम के व्याख्याता और डॉ. मोहन बहुगुणा कार्यक्रम के संयोजक थे।

गोष्ठी का उद्घाटन देश के प्रख्यात बहुविध रचनाकार आदरणीय श्री संतोष चौबे के उद्बोधन से हुआ। श्री चौबे ने वैश्विक आपदा कोविद की चर्चा करते हुए ध्यान दिलाया कि किस तरह इस महामारी से जूझते संसार ने निरामिष भोजन को अपनाया है, हाथ

मिलाना छोड़कर नमस्ते करने की आदत डाल ली है। इस समय विश्व में भारतीय संस्कृति की स्वीकार्यता बढ़ रही है और संस्कृति की स्वीकार्यता बढ़ने से भाषा निस्संदेह वैश्विक नेतृत्व ग्रहण कर लेती है। उन्होंने कहा कि इस समय हमें तकनीक और हिंदी के विकास की दिशा में काम करना चाहिए। तकनीक की दुनिया में हिंदी अब अन्य भाषाओं से कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है।

श्री बालेन्दु दाधीच ने कहा कि इस तरह की कार्यशाला का आयोजन इसलिए आवश्यक है, क्योंकि आम आदमी में तकनीक के प्रति जागरूकता की कमी है। तकनीक के बारे में कुछ बुनियादी बातों की जानकारी होना सभी के लिए आवश्यक है। उन्होंने इस कार्यशाला में बेहद सरल भाषा में और सहज ढंग से हार्डवेयर बनाम सॉफ़्टवेयर, ऑपरेटिंग सिस्टम - विंडोज़, मैक, लिनक्स, विंडोज़ बनाम ऑफ़िस, विभिन्न ऑफ़िस सुइट - ऑन प्रेम, क्लाउड, एम.एस. ऑफ़िस, आईवर्क, जी सुइट, लिब्र ऑफ़िस, वर्ड पर्वेक्ट, वर्ड, एक्सेल, पावरपोंइट से आगे - यामर, पावर बी. आई., डेल्व, शेयरपोंइट, वन ड्राइव, स्ट्रीम, आउटलुक, पब्लिशर, एक्सेस, विभिन्न इंटरनेट ब्राउज़र - गूगल क्रोम, माइक्रोसॉफ़्ट एज, एप्पल सफ़ारी, मोज़िला फ़ायरफ़ॉक्स, यूसी ब्राऊज़र पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने मोबाइल बनाम कंप्यूटर - उपभोग बनाम उत्पादकता, स्क्रीन, प्रोसेसर, भंडारण, कीबोर्ड, माउस, मल्टीटास्किंग, इंटरनेट बनाम वेब - ढाँचा/ कनेक्टिविटी बनाम सामग्री, क्लाउड बनाम इंटरनेट - ढाँचा बनाम संसाधन, आर्टीफ़िशियल इंटेलिजेंस - टेक्स्ट, ध्वनि, भाषा, दृष्टि, संवेदना, स्पर्श, स्वाद, गंध, ट्रांसलेशन बनाम ट्रांसलिटरेशन बनाम लिप्यंतरण बनाम कंप्यूटर सहाय्य अनुवाद, पीडीएफ़ बनाम ईबुक - टेक्स्ट फ़्लो, लचीलापन, मल्टीमीडिया, डी.आर.एम., फ़ाइल फॉरमैट्स, पाठ मानक और एनकोडिंग - यूनिकोड, टेक्स्ट इनपुट (इनस्क्रिप्ट, ट्रांसलिटरेशन, ध्वनि, हस्तलिपि), टेक्स्ट शेपिंग, स्टोरेज (यूनिकोड, यूटीएफ़ - 8 ), टेक्स्ट ट्रांसफ़र (यूनिकोड, यूटीएफ़ - 8), टेक्स्ट आउटपुट, डिस्प्ले पर भी बात की। उन्होंने इन्स्क्रिपट कीबोर्ड के महत्त्व की बात की और इसके प्रयोग पर ज़ोर दिया।

श्री राहुल देव ने अपने समापन संदेश में कहा कि यह ज्ञानसमृद्ध सत्र रहा। लगभग तीन घंटे के सत्र के अंत समय में भी लगभग 100 भागीदार मौजूद रहे। श्री अनूप भार्गव ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

*सुनीता पाहूजा की रिपोर्ट*

## मॉरीशस से ऑनलाइन बहुभाषी कवि-सम्मेलन

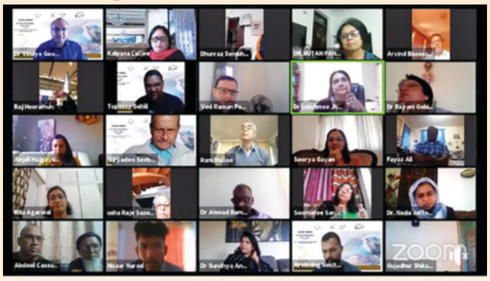

20 जून, 2020 को महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस के स्कूल ऑफ़ इंडियन स्टडीज़ के हिंदी विभाग द्वारा 'क्रिएटिविटी अनलॉक्ड' - बहुभाषी कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह मॉरीशस में हिंदी समेत अन्य भारतीय भाषाओं का पहला ऑनलाइन कवि-सम्मेलन रहा। इसमें मॉरीशस के हिंदी, उर्दू, तमिल, तेलुगु, मराठी व भोजपुरी भाषाओं के स्थापित व नवोदित कवि-कवयित्रियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

ऑनलाइन कवि-सम्मेलन का प्रारंभ डॉ. रामताली के स्वागत वक्तव्य से हुआ। तत्पश्चात् संस्थान की निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस अवसर पर संस्थान की महानिदेशिका श्रीमती सूर्यकांति गयान, जी.ओ.एस.के. भी जुड़ीं और अपना उद्बोधन दिया। सम्मेलन की अध्यक्षता महात्मा गांधी संस्थान के आई.सी.सी.आर. हिंदी पीठ डॉ. वेद रमण पांडेय ने की। हिंदी कवि-कवयित्रियों में श्री राज हीरामन, श्री सूर्यदेव सिबोरत, श्री धनराज शम्भु, श्रीमती कल्पना लालजी, श्रीमती सुमति बुधन, डॉ. राजरानी गोबिन, श्री अरविंदसिंह नेकितसिंह, श्री वशिष्ठ कुमार झमन, श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी, श्री सहलिल तोपासी, सुश्री संचना कनाराम व सुश्री दिव्या कुदोय रहे। उर्दू के कवियों में श्री अब्दुल कासम अलीमामोद, श्री फ़याज़ अली मोहम्मदअली, श्री मोहम्मद युसुफ़ सुब्राती व श्री नारोद मोहम्मद निसार अख़्तर रहे। तमिल कवयित्री श्रीमती नलिना मानिकम, तेलुगु कवयित्रियाँ डॉ. प्रवाशी चिनिया व डॉ. रीना दालिया तथा मराठी कवि श्री राम मालू ने भी अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। डॉ. प्रवाशी चिनिया ने अपनी प्रस्तुत तेलुगु कविता का भोजपुरी अनुवाद भी प्रस्तुत किया। भोजपुरी कवि-कवयित्रियों में डॉ. हेमराज सुन्दर, श्री जयगणेश दाओसिंह, श्रीमती संध्या अंचाराज किनू व श्री रितेश मोहाबीर रहे।

प्रस्तुति के बाद सम्मेलन अध्यक्ष डॉ. वेद रमण पांडेय ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया तथा प्रस्तुत कविताओं पर अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की। अंत में धन्यवाद-ज्ञापन वरिष्ठ व्याख्याता श्री गंगाधरसिंह गुलशन सुखलाल ने किया। कार्यक्रम का ऑनलाइन संचालन वरिष्ठ व्याख्याता डॉ. अलका धनपत, प्राध्यापिका डॉ. लक्ष्मी झमन व भोजपुरी विभाग के व्याख्याता डॉ. अरविंद बिसेसर ने किया। इस ऑनलाइन कवि-सम्मेलन में मॉरीशस के साथ, भारत, यू.एस.ए. व अन्य देशों से भी हिंदी प्रेमी जुड़े।

*विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट*

## मेरठ से तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबगोष्ठी

15, 16 तथा 17 जून 2020 को चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग एवं पुरातन छात्र परिषद् द्वारा 'प्रवासी साहित्य हिंदी, समकालीन साहित्यिक विधाएँ' विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबगोष्ठी का आयोजन किया गया। अंतिम दिन वेबगोष्ठी सोशल मीडिया, फ़िल्म, टेलीविजन और भाषा पर केंद्रित रही। वेबगोष्ठी में वक्ताओं ने सोशल मीडिया, फ़िल्म और टेलीविजन पर प्रयोग होने वाली हिंदी की भाषा पर विस्तार से जानकारी दी।

गोष्ठी के शुभारंभ में हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. नवीन लोहनी ने सभी वक्ताओं का स्वागत किया और उन्होंने सत्र के विषय का प्रतिपादन किया। वेबगोष्ठी की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की प्रतिकुलपति प्रो. वाई. विमला ने की। उन्होंने कहा कि भाषा आदर के योग्य होती है। इस रूप में हिंदी जनमानस के हृदय की अनुभूति की भाषा है, हिंदी भाषा आदर के योग्य है। प्रत्येक व्यक्ति को हिंदी भाषा के गौरव का अनुभव होना चाहिए और अपनी भाषा को ज़्यादा प्रयोग में लाना चाहिए।

वेबगोष्ठी के मुख्य अतिथि मुंबई विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर करुणा शंकर उपाध्याय ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज विश्व के अधिकांश नागरिक सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं, हिंदी आज विश्व में सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली भाषाओं में से एक है। गूगल का सर्वेक्षण भी इस बात की ताकीद करता है कि विगत 4 वर्षों में इंटरनेट पर प्रयुक्त कंटेंट में 94% की वृद्धि हुई है, जबकि अंग्रेज़ी में यह वृद्धि 19% है। सोशल मीडिया का दायरा बहुत ही व्यापक है, यह प्रयोक्ता को समूचे विश्व के साथ एक साथ जोड़ देती है। सोशल मीडिया आज छवि निर्माण और छवि भंजन दोनों का ही कार्य कर रहा है, इसलिए हमें अपने विवेक का प्रयोग करते हुए सोशल मीडिया का बहुत ध्यान से प्रयोग करना होगा। आमंत्रित वक्ता प्रो. गुरमीत सिंह, अध्यक्ष हिंदी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ने हिंदी मीडिया की भाषिक चुनौतियों पर बहुत ही सारगर्भित वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि भाषा हमारी भावनाओं का प्रकटीकरण है, भाषा का प्रश्न बहुत ही संजीदा प्रश्न है, इसे हमें गंभीरता से लेना चाहिए। हिंदी के विरुद्ध एक प्रकार का प्रोपागेंडा चलाया जाता है कि हिंदी कठिन है, जबकि अंग्रेज़ी के साथ ऐसा नहीं है, हमें इस मानसिकता से बाहर आना होगा। प्रोफ़ेसर गुरमीत सिंह ने के.बी.सी. के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया कि कैसे 'कौन बनेगा करोड़पति' के माध्यम से लाखों लोगों ने हिंदी बोलना और पढ़ना सीखा। भाषा की शुद्धता के प्रति सचेत रहने की बात उन्होंने की। उन्होंने कहा कि

मीडिया अपने अनुसार भाषा गढ़ता है, समाज में प्रचलित शब्दावली को मीडिया अपनी भाषा बनाता है, ताकि वह जनमानस तक अपनी गहरी पैठ कर सके। कार्यक्रम के समापन पर गाज़ियाबाद के वरिष्ठ पत्रकार डॉ. रवीन्द्र राणा ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद किया। वेबगोष्ठी के अंत में हिंदी विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर नवीन चंद्र लोहनी ने सभी अतिथियों, आमंत्रित वक्ताओं, विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति, संकायाध्यक्ष, विश्वविद्यालय के शिक्षक साथी, विश्वविद्यालय प्रशासन का धन्यवाद किया। संगोष्ठी का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

***साभार : खास खबर का फ़ेसबुक पृष्ठ***

## साँवलिया बिहारी लाल वर्मा की १२५ वीं जयंती पर श्रद्धांजलि

18 जून, 2020 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में साँवलिया बिहारी लाल वर्मा की 125वीं जयंती पर पुष्पांजलि-समारोह का आयोजन किया गया। साँवलिया बिहारी लाल वर्मा एक ऐसे आदरणीय महापुरुष थे, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन देश और समाज को समर्पित कर दिया था और अनेक आयामों से राष्ट्र और राष्ट्रभाषा की सेवा की। समारोह की अध्यक्षता करते हुए बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि साँवलिया जी भारतीय विधि आयोग तथा बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् और बिहार विधान परिषद् के भी माननीय सदस्य थे। उनका अखिल भारत वर्षीय हिंदी साहित्य सम्मेलन तथा बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन से भी, इसकी स्थापना के काल से ही गहरा जुड़ाव था। वे 1927 के नवम्बर माह में, सोनपुर में आयोजित विशेष अधिवेशन के सभापति बनाए गए थे। उन्होंने समाजोपयोगी अनेक क्षेत्रों में अपना महनीय अवदान दिया। वे एक महान स्वतंत्रता-सेनानी, राष्ट्र-भाषा हिंदी के महान पक्षधर, स्तुत्य शिक्षाविद, प्राध्यापक और साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक संस्थाओं के संस्थापक-पोषक और परोपकारी साधु-पुरुष थे। साँवलिया जी देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद के ममेरे अनुज तथा उन्हीं के समान बाल्य-काल से ही मेधावी थे। राजेंद्र बाबू के कारण साँवलिया जी महात्मा गांधी के भी निकट संपर्क में थे। सन् 1930 में गांधी जी द्वारा आहूत 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' और 'नमक सत्याग्रह' में भाग लेने के कारण वे गिरफ़्तार भी हुए। उन्होंने 'युरोपीय महाभारत', 'गद्य चंद्रिका', 'गद्य-चंद्रोदय', 'इस्लाम की झाँकी', 'विश्व धर्म-दर्शन', 'भारत में प्रतीक पूजा का आरंभ एवं विकास', 'गीता-विश्वकोष' (दो खण्डों में), 'अन्तरराष्ट्रीय विधि', 'लोक सेवक महेंद्र प्रसाद', 'दो आदर्श भाई', 'दक्षिण भारत की यात्रा', 'रामेश्वरम्-यात्रा' तथा 'बद्री-केदार यात्रा' (1961) नामक ग्रंथों का सृजन किया। उन्होंने 'तब और अब' शीर्षक से अपनी 'आत्मकथा' भी लिखी थी, जो प्रकाश में नहीं आ सकी।

इस अवसर पर सम्मेलन की उपाध्यक्षा डॉ. कल्याणी कुसुम सिंह, योगेन्द्र प्रसाद मिश्र, कुमार अनुपम, डॉ. शालिनी पाण्डेय, कृष्ण रंजन सिंह, चंदा मिश्र, पुरुषोत्तम कुमार, अमित कुमार सिंह आदि ने भी अपनी भावांजलि अर्पित की।

***डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट***

## दिल्ली से ऑनलाइन साहित्यिक परिचर्चा

13 मई, 2020 को आत्माराम कॉलिज, दिल्ली में वेबिनार के माध्यम से साहित्यिक परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा में डॉ. कमलेश वर्मा की पुस्तक 'जाति के प्रश्न पर कबीर' एवं डॉ. श्रीधरम की रचनाओं - कहानी-संग्रह – 'की रे हुकुम', 'स्त्री : सृजन और संघर्ष', 'महाभारत' (पाठ्य पुस्तक), 'स्त्री : स्वाधीनता का प्रश्न' और 'नागार्जुन के उपन्यास' तथा 'चन्द्रेश्वर कर्ण ग्रंथावली' पर चर्चा की गई।

वेबिनार में डॉ. कमलेश वर्मा ने 'जाति के प्रश्न पर कबीर' के बारे में बताया कि दलित विमर्श में कबीर को लेकर चिंतन की समस्याओं ने उन्हें लिखने के लिए प्रेरित किया।

डॉ. श्रीधरम ने अपने वक्तव्य में साहित्य से जुड़ाव एवं अपने रचनाप्रक्रिया के उद्भव पर प्रकाश डाला। कथाशिल्प पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि कहानी बहुत समय की मांग करती है। कहानी लेखन में कथ्य के साथ-साथ कला का भी होना अनिवार्य है। विषय के साथ प्रस्तुतिकरण भी प्रभावशाली होना चाहिए।

वेबिनार में राजकुमार, ज्ञानेन्द्र कुमार, डॉ. राजमोहिनी सागर, सोनिया मांगे, राजेश चंद आदर्श, तरुण सिंह, करुणाकर पाण्डेय आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अरविंद मिश्र और समापन अजीत कुमार ने किया।

***साभार : फ़ारवर्ड प्रेस.इन***

## नांदेड़ से शिक्षा और साहित्य पर अंतरराष्ट्रीय वेबिनार

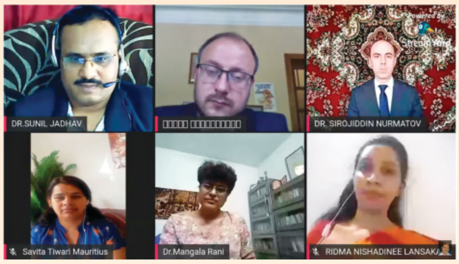


8 जून, 2020 को भारत, उज़्बेकिस्तान, श्रीलंका, मॉरीशस, रूस के संयुक्त उपक्रम 'शोध-ऋतु' अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका, नांदेड़ व ताशकंद प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय, ताशकंद-उज़्बेकिस्तान के संयुक्त तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय वेबिनार 'देश-विदेश में शिक्षा और साहित्य' का यूट्यूब पर सीधा प्रसारण किया गया। वेबिनार के मंच पर उद्घाटक व अध्यक्ष के रूप में पाटलीपुत्र विश्वविद्यालय, पटना की प्रोफ़ेसर मंगला रानी, अतिथि वक्ता ताशकंद विश्वविद्यालय से प्रो. सिरोजुद्दीन नुर्मातोव, शैक्षिक व शोध अधिकारी राजभाषा मंत्रालय, श्रीलंका से रिद्मा लंसकार, मॉरीशस से पत्रकार व लेखिका सविता तिवारी, रूस के कवि, लेखक, वक्ता इल्या ओस्तपेंको, वेबिनार के संयोजक सूत्र संचालक 'शोध-ऋतु' के संपादक डॉ. सुनील सिंह जाधव उपस्थित थे।

कार्यक्रम का आरम्भ उज़्बेक एवं भारतीय संगीत तथा मंगल गीत से हुआ। वेबिनार की भूमिका प्रस्तुत करते हुए डॉ. सुनील जाधव ने शिक्षा और साहित्य के पूरक संबंध को स्पष्ट करते हुए भारत में संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था को अपनाने पर बल दिया। शिक्षा का संबंध यदि चार दीवारी में दी जाने वाली शिक्षा है, तो साहित्य को वैश्विक कक्षा में दी जाने वाली शिक्षा व्यवस्था बताया।

प्रो. मंगला रानी ने भारतीय शिक्षा के वास्तविक रूप पर प्रकाश डालते हुए आत्मनिर्भर बनाने वाली शिक्षा को अपनाने की बात की। वहीं साहित्य को लेकर भारत के वेद ग्रंथों से लेकर आज तक के साहित्य और उसके महत्त्व पर बल दिया।

अतिथि वक्ता प्रो. नुर्मातोव ने उज़्बेकिस्तान की शिक्षा-व्यवस्था को लेकर उज़्बेक भाषा के साथ हिंदी भाषा में मिलने वाली शिक्षा को व्याख्यायित किया।

रिद्मा लंसकार ने श्रीलंका के छात्रों, कलाकारों, साहित्यकारों पर भारत के आदर्श प्रभाव की बात की और अपने देश की समृद्ध साहित्य परंपरा पर प्रकाश डाला।

श्रीमती सविता तिवारी ने अपने देश में शिक्षा के आरम्भ, विकास और वर्तमान को स्पष्ट किया।

साथ ही उन्होंने वहाँ पर हिंदी के प्रभाव को लेकर समृद्ध हिंदी साहित्य रचे जाने के उदाहरण देते हुए कहा कि भारत में आयोजित पुस्तक मेले में एक समय में सबसे अधिक हिंदी पुस्तकें देने का कार्य मॉरीशस के लेखकों ने किया।
अंत में अध्यक्षीय भाषण डॉ. मंगला रानी ने दिया। आभार-प्रदर्शन वेबिनार संयोजक श्री सुनील जाधव ने व्यक्त किया।

*साभार : लोकमत समाचार*

## अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी संपन्न

6-7 जून, 2020 को अखिल भारतीय साहित्य परिषद् द्वारा दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। वेब संगोष्ठी 'शिक्षा, साहित्य एवं संस्कृति : जीवनमूल्य' विषय पर आधारित रहा। संगोष्ठी का उद्घाटन परिषद् के गीत 'भारती की लोकमंगल, साधना साकार हो' के साथ हुआ।

बीज वक्तव्य में केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक व भारतीय हिंदी परिषद् के सभापति प्रो. नंदकिशोर पाण्डेय ने कहा कि भारतीय संस्कृति नदियों, पहाड़ों से विकसित होती है। राष्ट्र सांस्कृतिक सत्ता है, राजनीतिक इकाई नहीं है। भारत को जानने के लिए नदी और पहाड़ों पर सृजित साहित्य पढ़ना चाहिए। तुलसी के साहित्य में भारतीय संस्कृति की अद्भुत व्याख्या है। उसमें साहित्य, संस्कृति एवं जीवनमूल्यों की विशद विवेचना की गयी है।

विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र ने अपने विशिष्ट व्याख्यान में कहा कि भारत बहुविध भाषाओं का देश है। निज भाषाएँ वह अटूट बंधन है, जो कवच बनकर राष्ट्र को पराधीनता से बचाती हैं। सांस्कृतिक संपन्नता शिक्षा को भी संपन्न बनाती है। शिक्षा और संस्कृति के सहारे ही राष्ट्र की बुनियाद को मज़बूत किया जा सकता है।

मुख्य वक्ता कपिलवस्तु विश्वविद्यालय, सिद्धार्थनगर, उ.प्र. के कुलपति प्रो. सुरेंद्र दुबे ने कहा कि भारत एक चिन्मय राष्ट्र है, जिसकी अपनी एक विशिष्ट पहचान है। शिक्षा, साहित्य और जीवनमूल्य संस्कृति के ही मूल घटक हैं।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रीधर गोविंद पराडकर ने कहा कि कोरोना की इस वैश्विक महामारी के कारण यह समय आत्म मूल्यांकन एवं आत्मावलोकन का समय है। साहित्य जो सबके लिए आवश्यक है, उसे हमने जीवनोपयोगी उपकरणों में से निकालकर पाठ्यक्रम में डाल दिया है। आज हम जिसे शिक्षा कहते हैं और वह शिक्षा जिससे मनुष्य बनता है, उसके स्वरूप को जानते और समझते हुए इस दिशा में पहल करने की आवश्यकता है।

अतिथियों का स्वागत जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. कैलाश कौशल ने किया, परिचय व संचालन डॉ. नीलम राठी ने और परिषद् का गीत डॉ. राजेंद्र सिंघवी ने प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी की प्रस्तावना अखिल भारतीय साहित्य परिषद् जोधपुर प्रांत के अध्यक्ष व संगोष्ठी के निदेशक प्रो. नरेंद्र मिश्र ने प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि साहित्य और संस्कृति का अन्योन्याश्रित संबंध है। साहित्य को केवल मनोरंजन का कार्य नहीं करना चाहिए, बल्कि वह समाज का दिग्दर्शन कराने के लिए मशाल बने। आभार-प्रदर्शन राजस्थान अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के क्षेत्रीय अध्यक्ष डॉ. अन्नाराम शर्मा ने किया।

प्रथम वैचारिक सत्र 'साहित्य और समाज' पर केंद्रित था। प्रथम समानांतर सत्र 'साहित्य समाज का दर्पण' पर एकाग्र था। द्वितीय वैचारिक सत्र 'शिक्षा एवं साहित्य' तथा द्वितीय सामानांतर सत्र 'शिक्षा की संस्कृति और जीवनमूल्य' पर आधारित था। द्वितीय दिवस का प्रथम वैचारिक सत्र 'साहित्य और संस्कृति' तथा द्वितीय सत्र 'वाद-विवाद-संवाद' पर आधारित था।

समाहार सत्र में वक्ताओं ने कहा कि साहित्यकार का जीवन कम से कमतर नहीं बहु से बहुतर का होता है। वह मूल्यों का सृजन करता है। यदि साहित्यकार बिना प्रयोजन के साहित्य का सृजन करेगा, तो वह अपसंस्कृति को बढ़ावा देगा। संगोष्ठी के निदेशक प्रो. नरेंद्र मिश्र ने बताया कि उक्ताशय के विचार विभिन्न वक्ताओं ने अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी में व्यक्त किए। समाहार सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में उद्बोधन देते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि साहित्य मनुष्य की व्यापकता की सृष्टि करता है। साहित्य करुणा के सृजन का माध्यम है। लंदन के कहानीकार तेजेंद्र शर्मा ने मुख्य वक्तव्य दिया। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री ऋषि कुमार मिश्र ने कहा कि विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम का निर्धारण स्वयं की रुचि से किया जाता है जबकि यह विद्यार्थियों को केंद्रबिंदु बनाकर किया जाना चाहिए। विशिष्ट वक्ता बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति प्रो. रामसजन पाण्डेय रहे।

इसके पूर्व संगोष्ठी के निदेशक प्रो. नरेंद्र मिश्र ने दो दिवसीय संगोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस संगोष्ठी में लगभग 1500 लोगों ने भाग लिया तथा सोशल मीडिया के माध्यम से 35-40 हज़ार लोगों को इस संगोष्ठी ने लाभान्वित किया। संगोष्ठी में लंदन से तेजेंद्र शर्मा, मॉरीशस स्थित विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र, टेक्सास, अमेरिका से डॉ. दलपत सिंह राजपुरोहित, कोलंबो से मोनिका शर्मा, तोक्यो, जापान से डॉ. श्याम सुंदर पांडेय सम्मिलित हुए। संगोष्ठी के आठ सत्रों में अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, कपिलवस्तु विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. सुरेंद्र दुबे, रोहतक के कुलपति प्रो. रामसजन पाण्डेय, केंद्रीय हिंदी संस्थान के निदेशक व भारतीय हिंदी परिषद् के सभापति प्रो. नंदकिशोर पांडेय, श्रीधर पराड़कर (ग्वालियर), श्री विपिनचंद्र (जयपुर), डॉ. श्यामसुंदर पाण्डेय (तोक्यो, जापान), डॉ. इंदुशेखर तत्पुरुष, संपादक, साहित्य परिक्रमा, केंद्रीय हिंदी साहित्य अकादमी के संयोजक व पूर्व उपकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र, प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित, चंडीगढ़ से प्रो. जयप्रकाश, दिल्ली से प्रो. कुमुद शर्मा, प्रो. पूरनचंद टण्डन, प्रो. चंदन कुमार, लखनऊ से प्रो. पवन अग्रवाल, अरुणाचल प्रदेश से प्रो. हरीश शर्मा, भारतीय हिंदी परिषद् व अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के संरक्षक प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल, ललित निबंधकार प्रो. श्रीराम परिहार, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. शिवप्रसाद शुक्ल, अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय से प्रो. अवधेश कुमार एवं डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी, उज्जैन से प्रो. शैलेंद्र शर्मा, बोधगया से प्रो. भरत सिंह सहित देश के कोने-कोने से अनेक ख्यातिलब्ध शिक्षाविद एवं साहित्यकारों ने अपने विचार व्यक्त किए।

समापन समारोह का संचालन अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के राजस्थान शाखा के अध्यक्ष प्रो. अन्नाराम शर्मा ने तथा अभिमत चित्तौड़, जयपुर प्रांत के अध्यक्ष डॉ. ओमप्रकाश भार्गव, डॉ. विष्णु शर्मा हरिहर, जोधपुर प्रांत के महामंत्री डॉ. कर्णसिंह बेनीवाल व दिल्ली प्रदेश की महामंत्री डॉ. नीलम राठी ने प्रस्तुत किया। आभार प्रदर्शन जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. कैलाश कौशल ने किया। इस अवसर पर विभिन्न विश्वविद्यालय के अनेक प्राध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों ने ज़ूम ऐप एवं फेसबुक लाइव के माध्यम से सक्रिय भागीदारी की।

*प्रो. नरेन्द्र मिश्र की रिपोर्ट*

## ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी/वेबिनार

21 जून, 2020 को 'वैश्विक हिंदी परिवार' के तत्वावधान में 'उच्च शिक्षा और भारतीय भाषाएँ' विषय पर ऑनलाइन अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी/वेबिनार का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी 'अक्षरम्' - भारत, हिंदी भवन - भोपाल, वातायन - यू.के., हिंदी राइटर्स गिल्ड - कनाडा,

'झिलमिल' - अमेरिका, 'विश्वंभरा' - हैदराबाद और अमेरिका, 'सिंगापुर संगम' तथा 'कविताई' - सिंगापुर के सहयोग से संपन्न हुआ।

समारोह के मुख्य वक्ता रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि उच्च शिक्षा में भारतीय भाषाओं की स्वीकार्यता तब बढ़ेगी जब भारतीय भाषाएँ स्कूली शिक्षा में स्थापित होंगी। उन्होंने यह भी कहा कि सारी भारतीय भाषाओं को साथ लेकर एक डोमेन बनाते हुए हमें आगे चलना चहिए। भारतीय भाषाओं में लिबरल आर्ट्स के रूप में बहुत बड़ा काम हो सकता है।

'संकल्प फ़ाउंडेशन ट्रस्ट' के अध्यक्ष और शिक्षाविद श्री संतोष तनेजा ने आग्रह किया कि भारतीय भाषाओं में कम सामग्री होने हेतु सब से पहले सामग्री निर्माण पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि आज मुद्दा हिंदी बनाम भारतीय भाषाएँ है।

वरिष्ठ भाषा चिंतक श्री राहुल देव ने यह चिंता व्यक्त की कि भाषाई विविधता के लिए प्रसिद्ध भारत के पास कोई भाषा नीति नहीं है। आज शिक्षा निजी क्षेत्र अर्थात् अंग्रेज़ी में की जा रही है और भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा समाप्त हो रही है। उन्होंने यह अपील की कि भारतीय भाषाओं के अस्तित्व को सुनिश्चित रखना हो, तो शिक्षा को निजी क्षेत्र में जाने से रोकना होगा।

इस वेबिनार में डॉ. कविता वाचक्नवी, श्री अनूप भार्गव, श्री वीरेंद्र शर्मा, उषा राजे सक्सेना, रंजना अरगड़े, अनुपमा, ममता, राजीव कुमार रावत, गुर्रमकोंडा नीरजा आदि देश-विदेश के हिंदी प्रेमी सम्मिलित हुए।

'अक्षरम्' के अध्यक्ष अनिल जोशी ने विषय प्रवर्तन एवं संचालन किया तथा पद्मेश गुप्त ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

*डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा की रिपोर्ट*
*साभार : 'हैदराबाद से' ब्लॉग*

## ऑनलाइन मासिक काव्य गोष्ठी

17 मई, 2020 को कादम्बिनी क्लब, हैदराबाद द्वारा एक ऑनलाइन मासिक काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता डॉ. ऋषभदेव शर्मा ने की। क्लब की अध्यक्षा डॉ. अहिल्या मिश्र ने साहित्य के साथ जुड़े रहने को स्वास्थ्य के लिए हितकारी बताया। इस कार्यक्रम में लगभग 31 रचनाकारों ने काव्य-पाठ किया।

काव्य-पाठ में सम-सामयिक विषयों के साथ-साथ गीत, ग़ज़ल, कविताएँ आदि भी सम्मिलित थे। अपने अध्यक्षीय टिप्पणी में डॉ. ऋषभदेव शर्मा ने कहा कि इस आयोजन को ऑनलाइन होने के कारण नया आयाम मिला है। श्री अवधेश कुमार सिन्हा तथा श्री प्रवीण प्रणव ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

*साभार : कादम्बिनी क्लब का फ़ेसबुक पृष्ठ*

## ऑस्ट्रेलिया में नए कवियों की सफल कवि गोष्ठी 'खुला मंच'

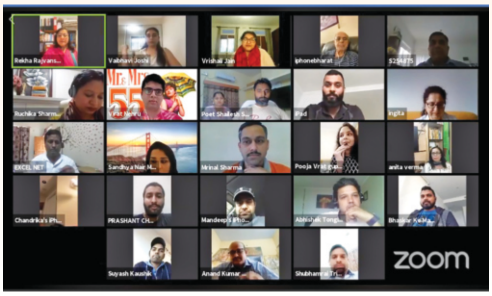


27 जून, 2020 को सिडनी की संस्था इंडियन लिटरेरी एन्ड आर्ट सोसायटी ऑफ़ ऑस्ट्रेलिया ने युवा और नए कवियों का 'खुला मंच' कवि-सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें सिडनी और मेलबर्न के कवियों ने भाग लिया।

संस्था की संस्थापक, कवयित्री और लेखिका रेखा राजवंशी पिछले बीस साल से ऑस्ट्रेलिया में हिंदी साहित्य और शिक्षण के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं। लॉकडाउन के चलते उन्होंने ज़ूम पर अनेकों कार्यक्रम आयोजित किए, जिनमें ऑस्ट्रेलिया और प्रशांत के कवियों के अलावा भारत के कवि भी आमंत्रित रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से ऑस्ट्रेलिया के कवि व लेखकों को अंतरराष्ट्रीय और भारतीय साहित्यकारों से मिलने का अवसर मिला। कहानी की संरचना का ज्ञान कराने के लिए 'कहानी का ताना-बाना' कार्यक्रम भी आयोजित किया।

दिल्ली की लेखिका, पत्रकार और कवयित्री अनीता वर्मा विशिष्ट अतिथि थीं, जिन्होंने सभी कवियों को प्रोत्साहित किया। 'खुला मंच' कार्यक्रम में सिडनी की रेखा राजवंशी के साथ, मेलबर्न के वरिष्ठ हिंदी कवि सुभाष शर्मा ने संचालन किया।

सिडनी के कवियों में अभिषेक टोंगिया, वृशाली जैन, मनित भास्कर, मृणाल शर्मा, गुरजीत कौर, मनीष राणा, रुचिका शर्मा, इंगिता ठक्कर, विराट नेहरू तथा वैभवी जोशी ने काव्य पाठ किया। मेलबर्न के संध्या नायर, पूजा व्रत गुप्त, सुयश शरद कौशिक और भारत के भी एक कवि आनंद शर्मा ने भाग लिया और अपनी कविताएँ सुनाईं।

अंत में कार्यक्रम संचालक सुभाष शर्मा ने हास्य व्यंग्य से भरपूर कविता का पाठ किया 'यू पी का बाप' और रेखा राजवंशी ने एक ग़ज़ल पढ़ी 'दर्द के माहौल में भी गीत गाते जाइये।' सिंगापुर से जुड़ी श्रद्धा जैन ने तकनीकी सहयोग दिया।

*रेखा रजवंशी की रिपोर्ट*

## तकनीकी कार्यशाला एवं भाषा विमर्श का आयोजन

28 जून, 2020 को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस एवं वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से तकनीकी कार्यशाला (श्रृंखला-2) एवं भाषा विमर्श (श्रृंखला-3) का ऑनलाइन आयोजन संयुक्त रूप से किया गया। तकनीकी कार्यशाला में वरिष्ठ तकनीकविद श्री बालेन्दु शर्मा दाधीच ने 'विंडोज़ 10 : कितना जाना, कितना पहचाना' विषय पर प्रस्तुतिकरण के साथ व्याख्यान दिया। भाषा विमर्श श्रृंखला के कार्यक्रम-3 में वरिष्ठ पत्रकार एवं भाषाविद श्री राहुल देव ने 'भारत में व्याप्त भाषा-भ्रम' पर विस्तार से चर्चा करते हुए प्रतिभागियों के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। इन दोनों वेब संगोष्ठियों में विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव श्री विनोद कुमार मिश्र एवं केन्द्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के नव नियुक्त उपाध्यक्ष तथा वैश्विक हिंदी परिवार के संयोजक श्री अनिल जोशी भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के प्रथम तकनीकी सत्र के प्रारम्भ में इसके संयोजक श्री मोहन बहुगुणा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। तकनीकी कार्यशाला के अंतरराष्ट्रीय संयोजक श्री अनूप भार्गव ने बालेंदु जी का परिचय दिया। श्री बालेन्दु दाधीच ने 'विंडोज़ 10-कितना जाना, कितना पहचाना' विषय पर बहुत ही व्यावहारिक एवं रोचक जानकारी दी। आपने आज के प्रौद्योगिकी युग की महती आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए वेबगोष्ठी के सभी प्रतिभागियों को 'विंडोज़ 10' की बारीकियों और उसमें उपलब्ध सुविधाओं से अवगत कराया। उन्होंने कुछ ऐसे रोचक शॉर्टकट भी बताए जिनसे 'विंडोज़ 10' पर कार्य करना प्रतिभागियों के लिए निश्चित रूप से सरल और

सुगम हुआ होगा। 'विंडोज़ 10' के बारे में उन्होंने बताया कि इसका सुरक्षा तंत्र बहुत मज़बूत है। इसमें अलग से कोई एंटी वायरस इंस्टॉल करने की ज़रूरत नहीं होती। इसमें अपडेट एवं सुरक्षा विशेषताएँ अंतर्निहित हैं। यह 'डिफ़ेंडर' का ही उन्नत संस्करण है, जिसमें फ़ायरवॉल आदि शामिल होते हैं। उन्होंने एक खास बात बताई कि 'विंडोज़ 10' को अपने मोबाइल की तरह री-सेट भी किया जा सकता है। इसमें गूगल वॉय्स टाइपिंग भी की जा सकती है। इसके अलावा, उन्होंने हिंदी टाइपिंग के लिए वर्तमान में उपलब्ध और 'विंडोज़ 10' में अंतर्निहित विभिन्न प्रकार के की-बोर्ड जैसे इंस्क्रिप्ट की-बोर्ड, फ़ोनेटिक की-बोर्ड, ऑनस्क्रीन की-बोर्ड, ट्रांसलिटेरेशन आदि को कैसे इनेबल किया जाता है और इसका प्रयोग कैसे करना है, इससे सभी प्रतिभागियों को अवगत कराया।

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र भाषा विमर्श के प्रारम्भ में इसके संयोजक डॉ. जवाहर कर्नावट ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए वैश्विक हिंदी परिवार के संयोजक श्री अनिल जोशी को केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के उपाध्यक्ष पद का पदभार संभालने के लिए बधाई दी। तत्पश्चात उन्होंने 'भारत में व्याप्त भाषा भ्रम' विषय की भूमिका प्रस्तुत करते हुए विस्तार से विचार व्यक्त करने के लिए श्री राहुल देव जी को आमंत्रित किया।

श्री राहुल देव ने कहा कि 'भाषा भ्रम' कई तरह के होते हैं। हिंदी और अंग्रेज़ी बोलने वाले कुछ लोग सचेत होकर अपनी भाषाओं का प्रयोग नहीं करते हैं। भाषाओं से जो लोग जुड़े हैं, उनका यह दायित्व बनता है कि वे पहले इन भ्रमों की पहचान करें और फिर इन्हें दूर करने के लिए ईमानदारी से प्रयास करें। उन्होंने कहा कि मेरे अब तक के ज्ञान और अध्ययन के आधार पर मैंने कुल मिलाकर 24-25 'भाषा भ्रमों' की सूची तैयार की है।

अंत में, उन्होंने कहा कि "मैं समेकित रूप से अंग्रेज़ी का विरोधी नहीं हूँ। मैंने हिंदी के साथ-साथ अच्छी अंग्रेज़ी सीखकर बहुत कुछ पाया है और दुर्लभ ज्ञान अर्जित किया है। डिजिटल डिवाइड को दूर करने, नवाचार पैदा करने की ज़रूरत है। इन गतिविधियों के भाषा संबंध पर भी काम करना आवश्यक है। अंग्रेज़ी-वंचित भी धीरे-धीरे नवाचार से जुड़ें और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में स्टार्टअप लाने की ज़रूरत को महसूस करें, केवल साइबर बुली बनने से काम नहीं चलेगा।"

इसके बाद प्रश्नोत्तर सत्र में कई श्रोताओं ने अपने प्रश्न किए, किंतु समयाभाव के कारण श्री राहुल देव जी द्वारा केवल चुनिंदा प्रश्नों का ही उत्तर दिया गया। एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि किसी भी विकसित देश की उच्च शिक्षा पारिभाषिक शब्दावली के बिना नहीं चल सकती।

अंत में भाषा विमर्श के अंतरराष्ट्रीय संयोजक श्री पद्मेश गुप्त ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस कार्यशाला एवं विमर्श को सफल बनाने में सिंगापुर से श्रीमती श्रद्धा जैन एवं शीतल जैन का विशेष योगदान रहा।

इस आयोजन में अक्षरम (भारत), हिंदी भवन (भोपाल), वातायन (यू.के.), हिंदी राइटर्स गिल्ड (कनाडा) और झिलमिल (अमेरिका), विश्वम्भरा (अमेरिका) सिंगापुर संगम, कविताई (सिंगापुर) सहयोगी रहे।

*श्री शिव कुमार निगम की रिपोर्ट*

## भाषा विमर्श - श्रृंखला 5

12 जुलाई, 2020 को विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस एवं वैश्विक हिंदी परिवार की ओर से कार्यक्रम के प्रथम सत्र में 'विदेशों में हिंदी मीडिया' पर परिचर्चा एवं भाषा-विमर्श श्रृंखला के कार्यक्रम 5 में 'हिंग्लिश हिंदी को बढ़ा रही है या खा रही है' विषय पर ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया गया। 'विदेशों में हिंदी मीडिया' पर परिचर्चा कार्यक्रम में श्री रवि शर्मा, रेडियो प्रसारक, ब्रिटेन, सुश्री अनीता बरार, एस.बी.सी., ऑस्ट्रेलिया, श्री सुमन घई, संपादक, साहित्य कुंज, कनाडा और श्री रोहित कुमार हैप्पी, संपादक, भारत दर्शन, न्यूज़ीलैंड ने अलग-अलग विषयों पर प्रस्तुति के साथ-साथ व्याख्यान दिया। भाषा विमर्श श्रृंखला के कार्यक्रम-5 में वरिष्ठ पत्रकार एवं भाषाविद श्री राहुल देव ने 'हिंग्लिश हिंदी को बढ़ा रही है या खा रही है' विषय पर विस्तार से चर्चा करते हुए प्रतिभागियों के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। इन दोनों वेब संगोष्ठियों में विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र एवं केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के उपाध्यक्ष तथा वैश्विक हिंदी परिवार के संयोजक श्री अनिल जोशी और हस्तक्षेप के लिए आकाशवाणी के पूर्व महानिदेशक श्री लक्ष्मी शंकर बाजपेयी भी विशेष रूप से उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अंत में भाषा-विमर्श कार्यक्रम के अंतरराष्ट्रीय संयोजक डॉक्टर पद्मेश गुप्त ने आभार व्यक्त किया। इस कार्यशाला एवं विमर्श को सफल बनाने में भारत से डॉ. मोहन बहुगुणा एवं डॉ. शैलेश शुक्ल, सिंगापुर से श्रीमती श्रद्धा जैन एवं शीतल जैन का विशेष योगदान रहा। इस आयोजन में अक्षरम (भारत), हिंदी भवन (भोपाल), वातायन (यू.के.), हिंदी राइटर्स गिल्ड (कनाडा) और झिलमिल (अमेरिका) एवं सिंगापुर संगम, कविताई (सिंगापुर) सहयोगी रहे।

*श्री शिव कुमार निगम की रिपोर्ट*

## 'भारतीय भाषाओं पर आसन्न संकट' पर व्याख्यान

14 जून, 2020 को अक्षरम (भारत), वातायन (यू.के.), हिंदी राइटर्स गिल्ड (कनाडा) और झिलमिल(अमेरिका) के संयुक्त तत्वावधान में वैश्विक हिंदी परिवार, हिंदी परिवार, हिंदी प्रेमी और भाषा विमर्श व्हाट्सएप समूहों द्वारा भारत के वरिष्ठ व लोकप्रिय पत्रकार एवं भाषाविद माननीय श्री राहुल देव जी के साथ भाषा विमर्श श्रृंखला की पहली गोष्ठी ज़ूम एप पर आयोजित की गई। इस अवसर पर भारत के शिक्षा-संस्कृति उत्थान न्यास के संरक्षक एवं संचालक श्री अतुल कोठारी की उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का संयोजन हिंदी भवन, भोपाल (म.प्र.) के निदेशक डॉ. जवाहर कर्नावट द्वारा किया गया और इसका संचालन अक्षरम (भारत) के अध्यक्ष एवं वैश्विक हिंदी परिवार के संयोजक श्री अनिल जोशी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में लंदन से डॉक्टर पद्मेश गुप्त का विशेष योगदान रहा और तकनीकी सहयोग सिंगापुर से सुश्री शीतल जैन एवं श्रद्धा जैन ने प्रदान किया।

कार्यक्रम की संकल्पना प्रस्तुत करते हुए वैश्विक हिंदी परिवार के संयोजक श्री अनिल जोशी ने जानकारी दी कि वैश्विक हिंदी परिवार जिसका विस्तार 30 देशों में है, ने भाषा विमर्श श्रृंखला प्रारंभ कर भारतीय भाषाओं के समक्ष चुनौतियों और उसके समाधान पर भारत के श्रेष्ठ भाषाविदों और विद्वानों के साथ यह श्रृंखला प्रारंभ की है। इससे हिंदी और भारतीय भाषाओं से जुड़ी समस्याओं पर समग्रता और गहराई से विचार किया जा सकेगा, साथ ही समाधान के रास्ते प्रशस्त करने पर विचार किया जाएगा।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. जवाहर कर्नावट ने कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री राहुल देव जी एवं विशिष्ट अतिथि श्री अतुल कोठारी जी का संक्षिप्त परिचय दिया। आपने उन्हें अपने विचार प्रकट करने के लिए आमंत्रित करने से पहले हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के अस्तित्व पर आसन्न संकट को दूर करने के लिए व्यक्तिगत के साथ-साथ संस्थागत रूप से कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री अतुल कोठारी ने कहा कि जैसे माँ और मातृभूमि का कोई विकल्प नहीं होता, उसी प्रकार भाषा का भी कोई विकल्प नहीं होना चाहिए और हमें केवल समाधान पर ही चर्चा करने की आवश्यकता है। उन्होंने भाषाओं के समक्ष मौजूदा संकट को दूर करने के लिए व्यापक जनजागरण, व्यापक जनांदोलन, अकादमिक स्तर पर संगठित प्रयासों जैसे समाधान बताए और कहा कि कम से कम प्राथमिक स्तर तक शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएँ हों, इस दिशा में काम करने की आवश्यकता है। श्री कोठारी ने कहा कि भारतीय भाषाएँ यदि शिक्षा का माध्यम होंगी, तो युवा पीढ़ी को उससे लगाव बना रहेगा। यह बदलाव लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के माध्यम से किया जा सकता है। उन्होंने भारतीय भाषाओं की गुणवत्ता और व्याकरणिक त्रुटियों पर ध्यान देने और भारतीय ज्ञान परम्परा को आगे बढ़ाने की दिशा में प्रयास

करने का आग्रह किया। भाषाओं के प्रति लगाव का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि वैदिक गणित पर एक ऑनलाइन कक्षा में हिंदी माध्यम रखने पर भी उस कक्षा में देश और दुनिया से लगभग 8800 छात्र जुड़े। इसी प्रकार, दिल्ली विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक द्वारा केवल हिंदी में पुस्तक लिखना और उसका अंग्रेज़ी अनुवाद उपलब्ध कराने के तमाम अनुरोधों को सिरे से नकार देना भाषा प्रेम को ही दर्शाता है। कार्यक्रम के संयोजक श्री जवाहर कर्नावट ने उनका आभार प्रकट करते हुए अवगत कराया कि श्री कोठारी मूलतः गुजराती भाषी हैं।

कार्यक्रम के संचालक श्री अनिल जोशी ने श्री राहुल देव जी का परिचय देते हुए कहा कि वे न केवल पत्रकारिता जगत के शीर्षस्थ अध्येता हैं, बल्कि भाषाओं पर आसन्न संकट को दूर करने की दिशा में जन आंदोलन खड़ा करने के लिए भी निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

श्री राहुल देव ने अपने उद्बोधन में सर्वप्रथम यह चिंता व्यक्त की कि शिक्षित और मध्यवर्गीय परिवारों के बीच देखा जाए, तो उनके और बच्चों के व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में उनकी मातृभाषा की स्थिति बहुत दयनीय हो रही है। उन्होंने स्पष्ट किया कि मैं केवल हिंदी के भविष्य को लेकर चिंतित नहीं हूँ, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं को लेकर भी उतना ही चिंतित हूँ। हम सभी हिंदीभाषी लोगों को भी अपने पूर्वाग्रहों को छोड़कर अन्य भारतीय भाषाओं के संरक्षण के लिए काम करना होगा। अंत में लंदन के प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. पद्मेश गुप्त ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

*श्री शिवकुमार निगम की रिपोर्ट*

## 'समकालीन साहित्य एवं संस्कृति' विषयक राष्ट्रीय वेबिनार

18 जून, 2020 को राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, जयपुर द्वारा 'समकालीन साहित्य एवं संस्कृति' विषयक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. भास्कर शर्मा ने मुख्य वक्ताओं का परिचय देते हुए स्वागत उद्बोधन प्रस्तुत किया तथा महाविद्यालय की स्थापना पर बात की। वेबिनार के मुख्य वक्ता मोहनलाल सुखड़िया विश्वविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा, दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सह आचार्य डॉ. मीरा द्विवेदी, जी.एम. पटेल कॉलिज की पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्षा डॉ. मीनाक्षी जोशी, हिस्लोप कॉलिज के अंग्रेज़ी विभाग के सह आचार्य एवं निदेशक डॉ. सुपंथा भट्टाचार्य तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कला संकाय के संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. फ़िरोज़ थे।

डॉ. मीरा द्विवेदी ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारतीय संस्कृति में सद्भाव, पारस्परिक विश्वास, अनेकता में एकता, विश्वबंधुत्व, एकात्मवाद आदि मूल्य पाए जाते हैं। उन्होंने संस्कृत के विभिन्न लेखकों की कविताओं का पाठ करते हुए वैदिक संस्कृति व साहित्य को उजागर किया।

प्रो. नीरज शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किए – "संस्कृति के आधार पर साहित्य का उद्यान विकसित होता है। हमें अपनी सांस्कृतिक मूल्यों को साहित्य में स्थान देकर उन्हें जीवित रखना चाहिए।"

डॉ. मीनाक्षी जोशी ने समकालीन परिधि के अलग-अलग रूपों पर बात की। उनका कहना है कि संस्कृति एक बीज है, जिसे विकसित होने के लिए कई चीज़ों की आवश्यकता है। संस्कृति और साहित्य समकालीन परिस्थितियों से सब से अधिक प्रभावित होते हैं। परिस्थितियों के आधार पर संस्कृति की शुरुआत होती है और तब साहित्य रचा जाता है।

डॉ. सुपंथा भट्टाचार्य ने संस्कृति की विस्तृत परिभाषा दी। उन्होंने साहित्य और संस्कृति का संबंध दिखाते हुए कहा कि साहित्य मानव ज्ञान, मानव विश्वास और मानव व्यवहार का परिचय देता है।

डॉ. फ़िरोज़ ने उल्लेख किया कि समकालीन साहित्य संस्कृत भाषा के आलोचकों को उत्तर देने में सक्षम है। उन्होंने कोरोना काल की रचनाओं पर बात करते हुए नवीन साहित्य की गतिविधियों से अवगत कराया और कोरोना के विषय में हमारे साहित्यकार की सोच को उद्घाटित किया। साथ-साथ उन्होंने कहा कि आज संस्कृत में अत्यधिक मात्रा में लिखा जा रहा है। जीवन के प्रत्येक पक्ष को विषय बनाकर अनेक विधाओं में सृजन किया जा रहा है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. सीमा जैन ने किया तथा आभार-ज्ञापन प्रो. शालिनी सक्सेना ने किया।

*यूट्यूब से साभार*

## पूर्वोत्तर राज्यों का साहित्य, कला और संस्कृति

15 जून, 2020 को इंदिरा गांधी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांगरमऊ, उन्नाव में संपूर्ण भारत को सांस्कृतिक रूप से एक सूत्र में बाँधने के उद्देश्य से ई.बी.एस.बी. क्लब और इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'पूर्वोत्तर राज्यों का साहित्य, कला और संस्कृति' विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया।

इसके माध्यम से देश भर के विभिन्न इतिहासकारों, विचारकों, साहित्यकारों और विषय विशेषज्ञों ने पूर्वोत्तर राज्यों के विशेष संदर्भ में भारत की संस्कृति, कला और साहित्य पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम के आरंभ में श्री अमित सिंह द्वारा रचित 'भारत दर्शन' का वीडियो प्रस्तुत किया गया, जिसमें महाविद्यालय की छात्रा अनुष्का शर्मा ने गायन किया। महाविद्यालय के 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम के नोडल अधिकारी श्री राजीव यादव ने संपूर्ण कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास और पुरातत्व विभाग के डॉ. अनिल कुमार ने अरुणाचल प्रदेश और मेघालय के पुरातत्व स्थलों का विस्तृत वर्णन करते हुए पूर्वोत्तर राज्यों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और योगदान पर अपने विचार रखे। महाविद्यालय के प्राध्यापकों डॉ. वी. के. मिश्र, डॉ. दिग्विजय नारायण और श्रीमती सविता ने भारत की संस्कृति पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. रंजना सिन्हा, डॉ. साधना गुप्त, डॉ. वी. के. मिश्र और श्री राजीव यादव द्वारा किया गया। डॉ. विष्णु मिश्र ने आभार व्यक्त किया। महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं और देश भर से 200 से अधिक प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

*साभार : सेहत टाइम्स.कॉम*

## 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य और प्रवासी साहित्य' विषयक अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

10 जुलाई, 2020 को आइजोल, भारत स्थित मिज़ोरम विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य और प्रवासी साहित्य' विषय पर एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। हिंदी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा ने वक्ताओं और प्रतिभागियों का स्वागत किया। इसके पश्चात् विभाग के वरीय सदस्य और संकायाध्यक्ष प्रो. सुशील कुमार शर्मा ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। हिंदी विभागाध्यक्ष और संगोष्ठी के संयोजक प्रो. संजय कुमार ने विषय प्रवर्तन किया और वक्ताओं का परिचय दिया।

वेब संगोष्ठी में तीन मुख्य वक्ताओं ने अपने महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त किए। प्रथम वक्ता विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के महासचिव प्रो. विनोद कुमार मिश्र थे। प्रो. मिश्र ने 'गिरमिटिया देशों में हिंदी और प्रवासी साहित्य की चुनौतियाँ' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने 'प्रवासन', 'डायस्पोरा' और 'गिरमिटिया' जैसे शब्दों को स्पष्ट करते हुए 'प्रवासी' शब्द की अवधारणा को स्पष्ट किया। उन्होंने तटस्थता और पारदर्शिता के साथ, परकाया प्रवेश की पद्धति अपनाकर बेहतर साहित्य सृजन करने की ज़रूरत पर बल दिया।

वेब संगोष्ठी की दूसरी वक्ता नेशनल यूनीवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर के सेंटर फ़ॉर लेंग्वेज स्टडीज़ से डॉ. संध्या सिंह रहीं। उन्होंने 'हिंदी का वैश्विक परिदृश्य और प्रवासी साहित्य : सिंगापुर के विशेष संदर्भ में' विषय पर अपनी बात रखी।

संगोष्ठी के तीसरे वक्ता ओस्लो, नॉर्वे से स्पाइल-दर्पण के संपादक श्री सुरेश चंद्र शुक्ल 'शरद आलोक' थे। उन्होंने 'प्रवासी साहित्य का वैश्विक परिदृश्य : अमेरिका और यूरोप महाद्वीप में' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए।

अंतिम सत्र प्रश्नोत्तर का था, जिसमें वक्ताओं ने प्रतिभागियों के सवालों का यथोचित जवाब देकर इस वेबिनार को और अधिक गरिमा प्रदान की।

वेब संगोष्ठी के सह-संयोजक डॉ. अमिष वर्मा ने संचालन और प्रश्नोत्तर के दायित्व का निर्वहन किया। अंत में हिंदी विभाग की सहायक आचार्य डॉ. सुषमा कुमारी ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

*डॉ. सुषमा कुमारी की रिपोर्ट*

# सम्मान / पुरस्कार

## यशपाल निर्मल कलम साधक उपाधि से सम्मानित

2 जुलाई, 2020 को डोगरी एवं हिंदी भाषा के युवा बाल साहित्यकार, लघुकथाकार, कथाकार, कवि, आलोचक, लेखक, अनुवादक, भाषाविद्, सांस्कृतिककर्मी एवं समाजसेवी श्री यशपाल निर्मल को उनके डोगरी एवं हिंदी भाषा और साहित्यिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए ब्रज लोक साहित्य कला संस्कृति अकादमी, आगरा द्वारा 'कलम साधक उपाधि' से सम्मानित किया गया।

अब तक हिंदी, डोगरी एवं अंग्रेज़ी भाषाओं में विभिन्न विषयों पर आपकी 30 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अनुवाद कार्य, साहित्य सृजन, समाज सेवा, पत्रकारिता और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अतुलनीय योगदान हेतु आपको कई मान-सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

*आभार : यशपाल निर्मल*

# श्रद्धांजलि

## डॉ. नंद किशोर 'नवल'

12 मई, 2020 को हिंदी साहित्य को अपनी तीक्ष्ण प्रतिभा और व्यापक अनुशीलन से समृद्ध करनेवाले डॉ. नंद किशोर 'नवल' का 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 2 सितंबर, 1937 को वैशाली ज़िले के चांदपुरा में हुआ था। आप पटना विश्वविद्यालय में हिंदी प्राध्यापक के रूप में कार्यरत रहे। आप एक विद्वान आचार्य और संपादक भी थे। आपने आलोचना साहित्य की प्रतिष्ठित पत्रिका 'कसौटी' के संपादन के साथ 'आलोचना' के संपादन-कार्य में भी सह-संपादक के रूप में कार्य किया। आप 1998 में सेवानिवृत्त हुए। आपकी गुरु-गंभीर मौलिक ग्रंथ रचनाएँ 'हिंदी आलोचना का इतिहास', 'आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास', 'बिम्ब प्रतिबिम्ब', 'पुनर्मूल्यांकन' आदि ने हिंदी भाषा और साहित्य के उन्नयन में ऐतिहासिक अवदान दिया है। आपने निराला रचनावली (8 खंडों में) और दिनकर रचनावली का संपादन भी किया।

*साभार : प्रभात खबर.कॉम*

## मेजर बलबीर सिंह 'भसीन'

7 जून, 2020 को प्रख्यात शिक्षाविद और साहित्यकार मेजर बलबीर सिंह 'भसीन' का 84 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप पटना सिटी स्थित गुरुगोविंद सिंह महाविद्यालय में अनेक वर्षों तक प्राचार्य तथा मगध विश्वविद्यालय में प्रतिकुलपति और फिर प्रभारी कुलपति रहे। आप मनोविज्ञान के प्राध्यापक तथा लब्ध-प्रतिष्ठ कवि-साहित्यकार थे। आपकी रचनाओं में 'पत्थर की चाहत', 'एक हिंदुस्तानी की खोज' तथा 'एक सफ़र हिंदोस्तान से हिंदोस्तान तक', 'एक सौ लघु कथाएँ' तथा 'जपजी साहिब और सुखमनी साहिब' आदि शामिल हैं। आपकी काव्य-दृष्टि मानवतावादी थी, जिसका आश्रय अध्यात्म था। आप उर्दू और पंजाबी में भी लिखा करते थे। आपने उर्दू पुस्तक 'सिख मत' तथा पंजाबी पुस्तक 'मेरी कलम दी आत्म हत्या' की भी रचना की। हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. अनिल सुलभ ने अपने शोकोद्गार में कहा कि मेजर भसीन के निधन से साहित्य संसार ने एक अत्यंत निष्ठावान, चरित्रवान और सिद्धांतवादी कवि खो दिया है। वे एक महान शिक्षाविद और भाव-प्रवण साहित्यकार थे।

*डॉ. अनिल सुलभ की रिपोर्ट*

## श्री शशिभूषण द्विवेदी

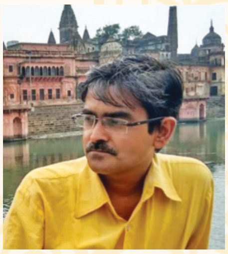

7 मई, 2020 को कथाकार, व्यंग्यकार व वरिष्ठ पत्रकार श्री शशिभूषण द्विवेदी का 44 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 26 जुलाई, 1975 को उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर में हुआ था। आपको 'ज्ञानपीठ नवलेखन पुरस्कार', 'सहारा समय कथा चयन पुरस्कार', और 'कथाक्रम कहानी पुरस्कार' से सम्मानित किया जा चुका है। 'एक बूढ़े की मौत', 'कहीं कुछ नहीं', 'खेल', 'खिड़की', 'छुट्टी का दिन' और 'ब्रह्महत्या' जैसी कहानियाँ तथा कथा-संग्रह 'कहीं कुछ नहीं' आपकी रचनाओं में शामिल हैं।

*साभार : हिंदी वेबदुनिया.कॉम*

**विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत् की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।**

# सूचना

## विश्व हिंदी पत्रिका 2020 के लिए शोध आलेख आमंत्रित

'विश्व हिंदी पत्रिका' विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा प्रकाशित एक अंतरराष्ट्रीय वार्षिक शोध पत्रिका है, जिसमें वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की स्थिति, चुनौतियों एवं संभावनाओं, हिंदी भाषा, साहित्य एवं शिक्षण के क्षेत्र में हो रहे अनुसंधान, हिंदी पत्रकारिता एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित महत्त्वपूर्ण मौलिक व सूचनापरक आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। विश्व हिंदी पत्रिका के पूर्व अंक सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध हैं।

पत्रिका के 12वें अंक के लिए सचिवालय विश्व भर के हिंदी विद्वानों, शोधार्थियों व चिंतकों की ओर से शोध आलेख आमंत्रित कर रहा है।

### नियम व शर्तें :

- लेख का शोधपरक होना अनिवार्य है।
- लेख के साथ संदर्भ ग्रंथ सूची संलग्न करना चाहिए।
- लेख लगभग **3000** शब्द संख्या का होना चाहिए।
- लेख यूनिकोड फ़ॉण्ट में टंकित होना चाहिए।
- संपादक मंडल द्वारा स्वीकृति मिलने पर ही आलेख प्रकाशित किया जाएगा।
- आलेख अप्रकाशित (प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक) व मौलिक एवं कॉपीराइट से स्वतंत्र होना चाहिए।
- संपादक मंडल द्वारा लेख स्वीकृत होने की स्थिति में मौलिक तथा अप्रकाशित लेखों के लिए विनम्र मानदेय दिया जाएगा।
- लेखक का संक्षिप्त परिचय, मोबाइल नंबर, ईमेल पता, एक पासपोर्ट आकार चित्र एवं लेख के मौलिक तथा अप्रकाशित होने का प्रमाण-पत्र भी साथ भेजना अनिवार्य है।
- आलेख डाक द्वारा अथवा ईमेल : vhpatrika2018@hotmail.com पर भेजा जा सकता है।
- अंतिम तिथि 14 अगस्त, 2020 है।

## विश्व हिंदी साहित्य 2020 के लिए रचनाएँ आमंत्रित

विश्व हिंदी सचिवालय वर्ष 2018 से एक वार्षिक अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक पत्रिका 'विश्व हिंदी साहित्य' का प्रकाशन कर रहा है। इसमें गद्य एवं पद्य विधाओं में विश्व के विभिन्न रचनाकारों द्वारा रचित कहानी, लघुकथा, काव्य, क्षणिका, ग़ज़ल, हाइकु, नाटक, एकांकी, निबंध, संस्मरण, यात्रावृत्तांत, रेखाचित्र, व्यंग्य, रिपोर्ताज, डायरी एवं साक्षात्कार को स्थान दिया जाता है।

'विश्व हिंदी साहित्य' के अंक सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध हैं।

'विश्व हिंदी साहित्य' के तृतीय अंक हेतु विश्व भर के हिंदी रचनाकारों की ओर से रचनाएँ आमंत्रित हैं।

### नियम व शर्तें :

- प्रत्येक रचनाकार की एक ही रचना स्वीकृत की जाएगी।
- रचनाओं की शब्द-संख्या विधाओं के आधार पर स्वीकार्य सीमा की होनी चाहिए।
- प्रत्येक रचना अप्रकाशित (प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक) व मौलिक एवं कॉपीराइट से स्वतंत्र होनी चाहिए।
- रचना यूनिकोड फ़ॉण्ट में टंकित होनी चाहिए।
- रचनाकार का संक्षिप्त परिचय, मोबाइल नंबर, ईमेल पता, एक पासपोर्ट आकार चित्र एवं रचना के मौलिक तथा अप्रकाशित होने का प्रमाण-पत्र भी साथ भेजना अनिवार्य है।
- संपादक मंडल द्वारा रचना स्वीकृत होने पर ही पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी।
- रचना डाक द्वारा अथवा ईमेल : vhsahitya2019@gmail.com पर भेजी जा सकती है।
- **अंतिम तिथि 21 अगस्त, 2020 होगी।**

# विश्व हिंदी दिवस 2021

के उपलक्ष्य में आयोजित

## 'अंतरराष्ट्रीय व्यंग्य-लेखन प्रतियोगिता'

**प्रतियोगिता को 5 भौगोलिक क्षेत्रों में बाँटा गया है :**

1. अफ़्रीका व मध्य पूर्व
2. अमेरिका
3. एशिया व ऑस्ट्रेलिया (भारत के अतिरिक्त)
4. यूरोप
5. भारत

**प्रत्येक क्षेत्र के विजेताओं को प्रमाण-पत्र व निम्नलिखित नकद पुरस्कार प्रदान किए जाएँगे :**

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम पुरस्कार | : | **300 अमेरिकी डॉलर** |
| द्वितीय पुरस्कार | : | **200 अमेरिकी डॉलर** |
| तृतीय पुरस्कार | : | **100 अमेरिकी डॉलर** |

**परिणामों की घोषणा विश्व हिंदी दिवस 2021 के समारोह के अवसर पर की जाएगी।**

## नियम व शर्तें :

- व्यंग्य-लेखन गद्य रूप में होना चाहिए।
- प्रत्येक प्रतिभागी से केवल एक ही प्रविष्टि स्वीकार की जाएगी।
- रचना देवनागरी लिपि में टंकित होनी चाहिए।
- रचना अप्रकाशित (प्रिंट अथवा इलेक्ट्रॉनिक) एवं मौलिक तथा कॉपीराइट से स्वतंत्र होनी चाहिए।
- प्रविष्टि पर प्रतिभागी का नाम, हस्ताक्षर और अन्य विवरण न हों। नाम, पता, फ़ोन नंबर तथा ईमेल पता एक अलग पृष्ठ पर लिखकर संलग्न करना अनिवार्य है।
- प्रविष्टि भौगोलिक क्षेत्र की नागरिकता के आधार पर स्वीकार की जाएगी। अतः नागरिकता का प्रमाण (पासपोर्ट/आई.डी. कार्ड/आधार कार्ड की प्रति) प्रस्तुत करना अनिवार्य है।
- लिफ़ाफे के ऊपरी बाएँ कोने पर अथवा ईमेल के विषय के रूप में 'अंतरराष्ट्रीय व्यंग्य-लेखन प्रतियोगिता' तथा 'भौगोलिक क्षेत्र' लिखा होना चाहिए।
- निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम होगा।
- विश्व हिंदी सचिवालय को व्यंग्य रचना के प्रकाशन का अधिकार होगा।
- प्रविष्टि डाक द्वारा अथवा ईमेल : whscompetitions@gmail.com पर भेजी जा सकती है।
- अंतिम तिथि 11 सितंबर, 2020 होगी।

## शेखपुरा, बिहार में पुस्तकालय का नामकरण डॉ. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ के नाम पर

मॉरीशस के डॉ. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ अंतरराष्ट्रीय ख्यातिलब्ध साहित्यकार है। भारत की सात हिंदी संस्थाओं ने उन्हें कई उच्च उपाधियों से विभूषित किया है। आपके कई अनुपम, मौलिक और कालजयी संदर्भ महाग्रंथ छपे हैं। वर्ष 2020 में शेखपुरा, बिहार के एक पुस्तकालय एवं वाचनालय का नामकरण 'डॉ. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ पुस्तकालय, वाचनालय' किया गया। श्री कृष्ण मुरारीसिंह 'किसान' ने पुस्तकालय के नामकरण के उपलक्ष्य में डॉ. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ जी के सम्मान में एक कविता की रचना भी की, जो इस प्रकार है :

"श्री कृष्ण भगवान के नाम से समर्पित बिहार में
डॉ. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ पुस्तकलय, वाचनालय खुलवाया है।
जिसमें माता के ये सपूत हैं, धन्यवाद सहमाता।
चरण कमल वंदन करने को, माथा स्वयं झुक जाता॥
धन्यवाद हो वे पिता, जिन्होंने आपको गोद खिलाया।
पकड़ उंगलियाँ धीरे से, पग पग चलना सिखाया॥
सेवाश्रम की संस्कृति को, आपने सदा संवारा।
कहें आप को विदुर-कबीरा या गंगा की धारा॥
इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ जी खुशबू जैसा आपका नाम।
एक पुस्तकालय, वाचनालय करता हूँ आपके नाम॥"

इस पुस्तकालय में वेद, पुराण, उपनिषद, संहिता, सत्यार्थ प्रकाश, संसार भर की तकनीकी, वैज्ञानिक पुस्तकें, साहित्यिक पुस्तकें तथा डॉ. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ की कई पुस्तकें उपलब्ध हैं। इस पुस्तकालय से विभिन्न कवि व लेखक जुड़े हुए हैं।

*आभार : डॉ. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ*
*एवं श्री कृष्ण मुरारीसिंह 'किसान'*

## श्री अनिल शर्मा केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के नए उपाध्यक्ष

27 जून, 2020 को मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने श्री अनिल कुमार शर्मा को केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा का उपाध्यक्ष नियुक्त किया है।

श्री अनिल शर्मा साहित्य जगत में अनिल जोशी के नाम से जाने जाते हैं। आपने नौ वर्षों तक ब्रिटेन और फ़िजी में राजनयिक के रूप में कार्य करते हुए हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। फ़िजी उच्चायोग में द्वितीय सचिव के पद पर रहते हुए आपके कार्य सराहनीय रहे हैं। हिंदी संस्थान के निदेशक प्रो. नन्दकिशोर पांडेय ने अपनी शुभकामनाएँ देते आशा व्यक्त की है कि श्री अनिल शर्मा के नेतृत्व में संस्थान विकास के नए सोपान चढ़ेगा।

श्री अनिल शर्मा से पहले डॉ. कमल किशोर गोयनका केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष थे। डॉ. कमल किशोर गोयनका ने वैश्विक हिंदी परिवार के माध्यम से श्री अनिल शर्मा को शुभकामनाएँ दी हैं। उन्होंने अपने संदेश में कहा "अनिल जोशी को बधाई। एक हिंदी सेवी सर्वथा उचित पद पर पहुँचा है। हिंदी सेवा के लिए देश-विदेश में पर्याप्त अवसर होंगे और नया करने की भी स्वतंत्रता होगी। एक सही व्यक्ति को सही जगह मिली है।

डॉ. कमल किशोर गोयनका के अतिरिक्त अशोक चक्रधर और ब्रज किशोर शर्मा केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के उपाध्यक्ष रह चुके हैं। केंद्र सरकार द्वारा 1960 में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल का गठन किया गया था। मंडल का प्रमुख उद्देश्य भारत के संविधान की धारा 351 की मूल भावना के अनुरूप अखिल भारतीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के शिक्षण-प्रशिक्षण, शैक्षणिक अनुसंधान, बहुआयामी विकास और प्रचार-प्रसार से जुड़े कार्यों का संचालन करना है।

*श्री रोहित कुमार हैप्पी की रिपोर्ट*

प्रधान संपादक : प्रो. विनोद कुमार मिश्र
संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
टंकण टीम : श्रीमती त्रिशिला आपेगाडु, श्रीमती जयश्री सिबालक-रामसर्न, श्रीमती विजया सरजु
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन : (230) 660 0800
ई-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक पृष्ठ : www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/

# संपादकीय

## भाषा की आत्मनिर्भरता

किसी भी प्राचीन और उत्कृष्ट सभ्यता वाले देश में आत्म निर्भरता की अवधारणा भी उतनी ही प्राचीन होती है, जितनी उसकी सभ्यता। एक ओर भाषा सभ्यता और संस्कृति को परिभाषित व व्याख्यायित कर सुरक्षा और संरक्षा के भाव से संपृक्त कर आने वाली पीढ़ी को उपहार देकर अपना कर्तव्य पूरा करती है, तो दूसरी ओर समृद्ध सभ्यता और संस्कृति भी भाषा को प्रौढ़, प्रांजल और आत्मनिर्भर बनाती है। समूचा आर्यावर्त ज्ञान, विज्ञान, भाषा, संस्कृति व विविध कलाओं के क्षेत्र में सदियों से समर्थ रहा है तथा पूरी दुनिया के लिए आकर्षण का केंद्र भी रहा है। यह हम जानते हैं कि किसी भी समुदाय को आत्मनिर्भरता की कसौटी पर तभी खरा उतार सकते हैं, जब उसकी भाषाई और सांस्कृतिक विरासत परिष्कृत और समृद्ध हो। स्वावलंबन, स्वभाषा, स्वशिक्षा और स्वशासन की आधारभूमि भाषा ही तैयार करती है। भाषाई आत्मनिर्भरता सामुदायिक स्वाभिमान के साथ जीने की प्रेरणा देती है और साथ ही साथ राष्ट्र को सम्पूर्णता में स्वावलंबी बनाती है। भारत जैसे देश में भाषाई सम्पदा सदियों से वैविध्यता से परिपूर्ण व अनमोल रही है, किन्तु यह बड़े दुख और आश्चर्य का विषय है कि इतनी समृद्ध भाषाई अस्मिता वाले देश में ब्रिटिश उपनिवेश की भाषा पर आज भी हम पूरी तरह निर्भर हैं और ऐसा होना भारतीय मनीषा को कठघरे में खड़ा करने जैसा है। यह अटल सत्य है कि किसी भी स्वाभिमानी राष्ट्र की बुनियाद वहाँ की मातृभाषाएँ होती हैं और वही भाषाएँ जनसरोकारों की पैरोकार भी होती हैं। जनसरोकारों से सुसंपन्न भाषाएँ ही अपनी सांस्कृतिक विरासत से ऊर्जा प्राप्त कर अपनी दक्षता को कई गुना बढ़ाने में सक्षम होती हैं व शिक्षा की मज़बूत आधार-शिला रखने में कामयाब भी होती हैं। गांधी जी ने कहा था कि बिना राष्ट्रभाषा के राष्ट्र गूंगा होता है। ७३ वर्षों से गांधी की भाषा-नीति पर चर्चा तक न किया जाना राष्ट्र पिता के सपनों के साथ छल करने जैसा ही है और यदि अब भी समाधान न किया गया, तो यह यक्ष प्रश्न की तरह हमारा पीछा सदियों तक करती रहेगी। अब सर्वानुमति से निर्णय लेना अपरिहार्य हो गया है, अन्यथा इतिहास क्षमा नहीं करेगा और आने वाली तमाम सदियाँ सवाल पर सवाल पूछकर हमारे राष्ट्र नायकों को शर्मिंदा करेंगी। तब उत्तर और प्रति उत्तर का वक्त समाप्त हो चुका होगा और यक्ष प्रश्न यथावत मुंह चिढ़ाएगा।
अतः अब वक्त आ गया है कि भाषाई आत्मनिर्भरता को विमर्श के केंद्र में लाया जाए और नए युग का आगाज़ किया जाए, क्योंकि विमर्श को केंद्र में लाए बिना भाषाओं को आत्मनिर्भर नहीं बनाया जा सकेगा। भाषा केवल विचारों की संवाहिका भर नहीं होती वरन संस्कृति, जातीय सभ्यता व सामाजिक चेतना की भी संवाहिका होती है।

स्वभाषा प्राप्त ज्ञान ही 'सा विद्या या विमुक्तये' की राह पर चलते हुए राष्ट्र की शैक्षिक विरासत को आने वाली पीढ़ी को सौंपकर जातीय सभ्यता की सार्वभौमिक पहचान को सुनिश्चित करता है। भाषाई आदर्श की संकल्पना संभावनाओं को चिह्नित करते हुए भाषाई संस्कृति को नया आयाम प्रदान करती है, फिर धीरे-धीरे युग धर्म के अनुसार रचनात्मक यात्रा अपने मुकाम पर पहुँच पाती है। दुनिया भर के शिक्षा-शास्त्री मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा की वकालत करते रहे हैं और एक हम हैं कि इस बात को समझने में इतना वक्त लगा दिए।

यह जगत विदित है कि भाषा की कड़ाही में पककर ही शिक्षा मृण्मय से हिरण्यमय और फिर चिन्मय की यात्रा कराती है। और हाँ, भाषा के सांस्कृतिक आधार का मूल्यांकन केवल उसके संप्रेषण और उसकी रचना की समसामयिकता से नहीं किया जा सकता, बल्कि उसके सांस्कृतिक आधार की सुदीर्घ व गौरवशाली परंपरा का भी मूल्यांकन आवश्यक है। संस्कृति की नव संरचना में भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। उसके पीछे सर्जनात्मक शक्ति पूरी सक्रियता के साथ खड़ी रहती है। हम यह भी जानते हैं कि भाषा की व्याप्ति उसकी शक्ति, सम्प्रेषण व शिक्षा के व्यावहारिक विस्तार को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में उच्च स्थान प्रदान करती है। विघ्न-बाधाओं के बावजूद हज़ारों वर्षों की इनकी ऐतिहासिक यात्रा में इन्होंने सम्प्रेषण से काव्य भाषा तक की यात्रा में उपलब्धियों के कई नए मुकाम हासिल किए हैं तथा यह वह मज़बूत बंधन है, जो अनन्त काल तक राष्ट्र को बिखरने, टूटने और समाप्त होने के खतरे से बचाते हुए एक सूत्र में बाँधकर रख सकेगा, ऐसा विश्वास है। इतना ही नहीं यह वह कवच है, जो समूची मानवता को वैचारिक पराधीनता से भी बचाएगी। किन्तु विडम्बना यह है कि छद्म विकास और विश्व भाषा के झूठे नाम पर हमारे स्वत्व और स्वाभिमान को कुचलने की साज़िश सैकड़ों वर्षों से लगातार रची जा रही है और अब तो धीरे-धीरे सांस्कृतिक पराधीनता की आहट भी सुनायी देने लगी है और हम यह भी जानते हैं कि सांस्कृतिक पराधीनता राष्ट्र को अखंड नहीं रख सकती है। अतः भाषा बचेगी तो शिक्षा बचेगी और शिक्षा बचेगी तो संस्कार भी बचेगा और फिर संस्कृति की मदद से राष्ट्र को अचल और अटल बनाये रखने का प्रयास किया जा सकेगा। आज संस्कार के स्तर पर और चिन्तन के स्तर पर भाषा की मदद से ही शिक्षा प्रणाली को जीवन और जगत के व्यवहार के अनुकूल बनाना अपरिहार्य है वरना प्राप्त सांस्कृतिक स्वाधीनता को बचाए रखना दुष्कर हो जाएगा।

प्रो. विनोद कुमार मिश्र
महासचिव